



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

परावर्तन

अर्धवार्षिक पत्रिका, अंक-1, नवंबर, 2025



रचना प्रकाशन हेतु दिशा-निर्देश

- प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचनाओं में रचनाकार का पूरा नाम, पदनाम, विभाग एवं संपर्क विवरण स्पष्ट रूप से अंकित हो।
- प्रेषित रचना पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होनी चाहिए।
- प्रकाशन हेतु प्रेषित रचनाओं में प्रासंगिक चित्र अथवा छायाचित्र भी यथासंभव संलग्न किए जा सकते हैं।
- 'परावर्तन' में प्रकाशन हेतु संस्थान परिसर में कार्यरत अथवा निवासरत सभी सदस्यों के विचारों, अनुभवों एवं सृजनात्मक अभिव्यक्तियों का स्वागत किया जाएगा; किंतु किसी भी प्रकार के राजनैतिक अथवा विवादास्पद विषयों को सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार होंगे; संस्थान का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
- प्रकाशन हेतु प्रेषित रचनाओं में प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।

**साभार,
राजभाषा एकक
भा.प्रौ.सं भुवनेश्वर**

ऋग्वेद 1.1.1

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

हिन्दी अर्थ

मैं अग्नि की स्तुति करता हूँ। वे यज्ञ के पुरोहित, दानादि गुणों से युक्त, यज्ञ में देवों को बुलाने वाले एवं यज्ञ के फल रूपी रत्नों को धारण करने वाले हैं।

संपादक मंडल

संरक्षक

प्रो. श्रीपाद करमलकर
निदेशक

निर्देशन

श्री बामदेव आचार्य
कुलसचिव

मुख्य संपादक

डॉ. अविजित कुमार

प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक

संपादक

श्री हेमंत कुमार यादव
हिंदी अनुवादक

संपादन सहयोग

डॉ सुनील कुमार प्रजापति
सह-प्राध्यापक

डॉ अपर्णा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक

डॉ इंद्रेश यादव
सहायक प्राध्यापक

डॉ महेंद्र कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक

श्रीमती धरित्री शतपथी
जन संपर्क अधिकारी

विशेष संपादन सहयोग

संस्थान हिंदी साहित्य समिति “अभिव्यक्ति” की समूची टीम



निदेशक की कलम से

प्रो. श्रीपाद करमलकर
निदेशक

आईआईटी भुवनेश्वर की अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका परावर्तन के प्रथम संस्करण का प्रकाशन हमारे संस्थान की सृजनात्मक विरासत और सांस्कृतिक चेतना को एक नई दिशा देता है। यह एक ऐसा क्षण है जहाँ हम एक सामूहिक यात्रा की शुरुआत कर रहे हैं—एक ऐसी यात्रा जो विचारों, अभिव्यक्तियों और नवाचारों को भाषा के माध्यम से जोड़ती है।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के प्रेरक शब्द हमें स्मरण कराते हैं: “इससे पहले कि सपने सच हों, आपको सपने देखने होंगे।” परावर्तन इसी सपने को साकार करने का एक माध्यम है—जहाँ शब्द केवल लिखे नहीं जाते, बल्कि सोचे जाते हैं, महसूस किए जाते हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा बनते हैं।

आईआईटी भुवनेश्वर सदैव मानता है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि वैचारिक स्वतंत्रता, रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान-लोक के विस्तार का आधार है। संस्थान में हिंदी के प्रति हमारा दृष्टिकोण केवल “अनुपालन” भर नहीं है; यह एक सांस्कृतिक जिम्मेदारी और शिक्षण-शोध वातावरण के मानवीय आयाम को समृद्ध करने का प्रयास है।

इस पत्रिका का सार इसकी रचनाओं में नहीं, बल्कि उस भावना में निहित है जो लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ती है और नए विचारों को जन्म देती है। परावर्तन एक ऐसा मंच है जहाँ विज्ञान, तकनीक, साहित्य और संस्कृति—सब एक साथ संवाद करते हैं।

मैं राजभाषा एकक को इस महत्वपूर्ण पहल के लिए बधाई देता हूँ और उन सभी रचनाकारों का अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने अपने विचारों से इस प्रथम अंक को समृद्ध बनाया है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका आने वाले वर्षों में हमारे संस्थान की पहचान, संवेदनशीलता और रचनात्मक संस्कृति का एक जीवंत दस्तावेज़ बनेगी।

श्रीपाद करमलकर

हस्ताक्षर



श्री बामदेव आचार्य
कुलसचिव

कुलसचिव का संदेश

आईआईटी भुवनेश्वर की अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका 'परावर्तन' के प्रथम अंक के प्रकाशन पर मैं सम्पूर्ण संस्थान समुदाय को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पत्रिका न केवल हमारे अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का सजीव मंच है, बल्कि संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन, प्रसार और व्यावहारिक उपयोग को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल भी है।

राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों के अनुरूप, आईआईटी भुवनेश्वर प्रशासनिक प्रक्रियाओं में हिंदी के सुव्यवस्थित अनुपालन, डिजिटाइज्ड वर्कफ्लो में भाषा-सुलभता, तथा हिंदी में दक्षता-विकास प्रशिक्षण जैसे अनेक प्रयासों को निरंतर आगे बढ़ा रहा है। विभिन्न विभागों एवं इकाइयों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने हेतु आयोजित कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ एवं जागरूकता कार्यक्रम हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हैं।

परावर्तन में प्रकाशित रचनाएँ हमारी संस्थागत संस्कृति की सृजनात्मक ऊर्जा, बौद्धिक समृद्धि तथा भाषाई विविधता का सुंदर प्रतिरूप प्रस्तुत करती हैं। यह पत्रिका हमें यह भी याद दिलाती है कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि सहज संप्रेषण, समन्वय और सांस्कृतिक एकता का माध्यम है, जो हमारे कार्य-परिवेश को और अधिक प्रभावी एवं समावेशी बनाती है।

मैं राजभाषा इकाई, संपादकीय टीम और सभी योगदानकर्ताओं के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह अंक भी हिंदी के संवर्धन के प्रति हमारे सामूहिक प्रयासों को नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगा।

हस्ताक्षर



मुख्य संपादक

डॉ. अविजित कुमार
प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा एकक

प्रिय पाठकगण,

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर की प्रथम अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "परावर्तन" का प्रवेशांक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका हमारे संस्थान के उन सभी रचनात्मक मनो का मंच है जो तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र के साथ-साथ साहित्य, कला और अभिव्यक्ति के विविध आयामों में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं।

“परावर्तन” केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि यह हमारे विचारों, अनुभवों और भावनाओं का प्रतिबिंब है — एक ऐसा दर्पण जिसमें हमारे संस्थान के परिवार के सदस्य अपनी साहित्यिक संवेदनाओं और सृजनशील ऊर्जा को दिशा दे सकते हैं। इस पत्रिका का उद्देश्य संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार को सशक्त बनाना है ताकि यह केवल प्रशासनिक भाषा न रहे, बल्कि संवाद और सृजन की भी भाषा बने।

हम सभी संकाय, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी इस पत्रिका के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को साझा कर सकते हैं — चाहे वह वैज्ञानिक आलेख हो, कविता हो, कहानी, निबंध, संस्मरण या यात्रा-वृत्तांत। यह पहल न केवल हिंदी प्रेम का परिचायक है, बल्कि यह हमारे तकनीकी संस्थान की मानवीय चेतना का भी प्रतीक है।

अंत में, मैं सभी सहयोगियों, रचनाकारों और संपादकीय टीम को उनके योगदान और समर्पण के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आशा है कि “परावर्तन” संस्थान के हर सदस्य के मन में भाषा के प्रति प्रेम, अभिव्यक्ति की भावना को प्रबल करेगी।

अविजित
हस्ताक्षर



संपादकीय

हेमंत कुमार यादव
हिन्दी अनुवादक

सुधी पाठकगण,

“आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।” (ऋग्वेद १.८९.१)

अर्थात् — “हमारे पास चारों दिशाओं से कल्याणकारी विचार आएँ।”

वेद की यह ऋचा मानव जीवन के चिरंतन आदर्श को उद्घोषित करती है; ज्ञान, सृजन और चिंतन की कोई सीमाएँ नहीं होतीं; वे दिशाओं, भाषाओं और कालखण्डों की परिधि से परे, समस्त मानवता के हित में प्रवाहित होता है। इसी उदात्त भाव से प्रेरणा लेकर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर की प्रथम अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “परावर्तन” को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है।

संस्थान का प्रत्येक सदस्य — संकाय, अधिकारी, कर्मचारी या विद्यार्थी — इस पत्रिका में अपने विचारों, अनुभूतियों और रचनात्मक भावों को अभिव्यक्ति देने हेतु आमंत्रित है। यह मंच हमें स्मरण कराता है कि हिंदी केवल कार्य-भाषा नहीं, बल्कि हमारी हृदय की भाषा है; यह वह माध्यम है जो हमारे विचारों को सहजता, सरसता और सजीवता प्रदान करती है।

हमारा प्रयत्न है कि “परावर्तन” के माध्यम से राजभाषा हिंदी संस्थान के प्रांगण में, उसके प्रत्येक संवाद में, प्रत्येक रचनात्मक प्रयास में सजीव उपस्थिति दर्ज करे। यह पत्रिका हमारे भीतर स्थित उस सृजनशील चेतना का प्रतिरूप बने जो ज्ञान की चारों दिशाओं से प्रकाश ग्रहण कर स्वयं भी आलोक बिखेरती है।

अंत में, मैं उन सभी रचनाकारों, सहयोगियों और संपादकीय सहकर्मियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनके श्रम, समर्पण और साहित्यिक दृष्टिकोण ने “परावर्तन” को आकार प्रदान किया। आशा है यह पत्रिका संस्थान में न केवल भाषा प्रेम का प्रतीक बनेगी, बल्कि ज्ञान और सृजन की नई दिशाओं का उद्घाटन भी करेगी।

हेमंत यादव
हस्ताक्षर

अनुक्रमणिका

अंक
1

क्र	शीर्षक	पृष्ठ
1	निदेशक की कलम से	6
2	कुलसचिव का संदेश	7
3	मुख्य संपादक	8
4	संपादकीय	9

वैचारिकी

5	सतत विकास की ओर भारत : पर्यावरणीय चुनौतियाँ और नीतिगत दृष्टिकोण	11
6	किताबें : सोच का संचार, समाज का आधार	14
7	स्वच्छता : एक उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण की नींव	15
8	मोबाईल : जीवन का साधन या बंधन	17
9	कोशिश करने वालों की हार नहीं होती	19
10	एक कदम	20

आध्यात्मिक यात्रा

11	भीड़ में ठहरी नजरें : मेरी 'सुनावेश' यात्रा	21
12	तीर्थ के चरण : जगन्नाथ मंदिर की पवित्र 22 सीढ़ियाँ	23

वैचारिकी एवं तकनीकी

13	सेमीकंडक्टर की उड़ान : भारत की आत्मनिर्भरता	25
14	'इमोजी' - अभिव्यक्ति का नया संसार	32
15	उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में हिंदी की स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएं	34

क्र	शीर्षक	पृष्ठ
लोक संस्कृति और लोक कथा		
16	नेत पिला : सेवायत परंपरा की सांस्कृतिक दीपशिखा	36
17	संथाल संस्कृति : एक जीवंत विरासत	39
18	राजा मुंज और भोज की प्रेरक लोककथा	41

सफरनामा

19	मेरी कश्मीर यात्रा : धरती के स्वर्ग का एक यादगार सफर	43
----	--	----

कवितांजलि

20	तनया	45
21	अमृत वर्षा	46
22	आर्तनाद	47
23	मखमली प्यास	48
24	शहीदों की जमीन : मेरा हिंदुस्तान	49
26	मुश्किल तेरा अंत नहीं	49
27	तुमने आखिर क्या देखा	50
28	तुम्हें ढूँढता हूँ	50
29	फिर कर लेने दो प्यार प्रिये	51
30	हो गई है पीर पर्वत	51

परावर्तन

प्रकाशन सम्पर्क : राजभाषा एकक, भारतीय प्रद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर, खोर्धा, ओडिशा, भारत

ईमेल : office.rajbhasha@iiitbbs.ac.in || वेबसाइट : <https://www.iiitbbs.ac.in/index.php/hindi-home-page/>

नोट : इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ एवं अन्य सामग्री लेखक/रचनाकार के स्वयं के विचार हैं। इनसे संस्थान का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : support@anjaniprakashan.com



सतत विकास की ओर भारत: पर्यावरणीय चुनौतियाँ और नीतिगत दृष्टिकोण



अभिषेक दाश
छात्र

भारत एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मोड़ पर खड़ा है। तीव्र विकास और विशाल आबादी के साथ, देश जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण से उत्पन्न महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रहा है। तथापि, भारत की प्रतिक्रिया केवल एक उच्च-स्तरीय दूरदृष्टि मात्र नहीं है; यह एक मजबूत भविष्य के निर्माण हेतु परिकल्पित ठोस, महत्वाकांक्षी लक्ष्यों की एक श्रृंखला है। यह प्रसंग प्रमुख समस्याओं, भारत द्वारा की गई विशिष्ट पहलों और सफलता के लिए आवश्यक व्यावहारिक कदमों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। हमारा अंतिम लक्ष्य एक ऐसे भविष्य का सृजन करना है जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करे, जो एक समावेशी और तन्यक समाज तथा अर्थव्यवस्था के निर्माण की हमारी

दूरदृष्टि का अभिन्न अंग है, और पर्यावरणीय संतुलन के साथ सामंजस्य स्थापित करती है। यह वसुधैव कुटुम्बकम् के प्राचीन दर्शन के साथ संरेखित है, जो हमारी जिम्मेदारी को न केवल मानवजाति बल्कि सभी जीवित प्राणियों तक विस्तृत करता है। यह स्वीकार करते हुए कि पृथ्वी का स्वामित्व समग्र प्राणियों का है, हमारा गहन उद्देश्य उस सद्भाव और संतुलन को पुनर्स्थापित करना है जो प्रकृति माँ ने हमें प्रदान किया है। भारत में पर्यावरणीय मुद्दे कई जटिल कारकों के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं। जनसंख्या वृद्धि और विकसित होती उपभोग पद्धतियाँ प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डालती है, जिससे ऊर्जा, जल और अन्य महत्वपूर्ण संसाधनों की मांग में वृद्धि हो रही है। तीव्र, अनियोजित शहरीकरण और औद्योगीकरण वायु और जल प्रदूषण के प्राथमिक स्रोत हैं, जो सीधे सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। कृषि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग जैसी प्रथाएं मृदा के स्वास्थ्य में अवनति करती हैं और जल निकायों को दूषित करती हैं, जबकि फसल

अवशेष जलाना वायु प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। बढ़ती ऊर्जा की मांग अभी भी बड़ी मात्रा में जीवाश्म ईंधन से पूर्ति होती है जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि होती है और जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है। परिणामस्वरूप, भारत जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों का अनुभव कर रहा है, जिसमें अत्यधिक गर्मी की लहरें, अनियमित मानसून, बाढ़ और सूखे जैसी चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि शामिल है। ये सीधे कृषि, जल सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं, जबकि समुद्र के स्तर में वृद्धि तटीय आबादी के लिए खतरा पैदा करती है। जल, वन और खनिज जैसे संसाधनों का अत्यधिक दोहन उनके क्षरण का कारण बन रहा है, जिसके परिणामस्वरूप भूजल स्तर घट रहा है और जैव विविधता का नुकसान हो रहा है। इसके अलावा, शहरीकरण के साथ अपर्याप्त अपशिष्ट प्रबंधन ठोस कचरे की मात्रा में भारी वृद्धि करता है, जिससे भूमि और जल प्रदूषित होते हैं और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा होता है।

भारत विशिष्ट, मापने योग्य कार्यक्रमों और नीतिगत पहलों के माध्यम से सक्रिय रूप से बदलाव लागू कर रहा है। पेरिस समझौते के तहत, राष्ट्र 2030 तक अपनी उत्सर्जन तीव्रता को 45 प्रतिशत (जो 2005 के स्तर से है) तक कम करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसका लक्ष्य गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से अपनी बिजली क्षमता का 50 प्रतिशत हासिल करना है। इसे प्राप्त करने के लिए, एक महत्वपूर्ण नवीकरणीय ऊर्जा अभियान चल रहा है, जिसका लक्ष्य 2030 तक 500 गीगावाट (जीडब्ल्यू) है, जिसमें सौर और पवन ऊर्जा पर विशेष ध्यान दिया गया है। 2025 के मध्य तक, देश इस क्षमता का 235 गीगावाट से अधिक हासिल कर चुका है, जो कुल लक्ष्य का लगभग 47 प्रतिशत है। महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पूरा करने के लिए, भारत को अगले पाँच वर्षों में सालाना लगभग 50 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता जोड़ने की आवश्यकता है। हालांकि यह एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है - सरकार और उद्योग विशेषज्ञ इसे एक प्राप्त करने योग्य लक्ष्य मानते हैं।

प्रदूषण नियंत्रण के लिए, 2019 में शुरू किया गया

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (एनसीएपी) का लक्ष्य प्रदूषित शहरों में 2024 तक पार्टिकुलेट मैटर (पीएम 2.5 और पीएम 10) की सांद्रता को 20-30 प्रतिशत तक कम करना है। इसके अलावा, जल और अपशिष्ट प्रबंधन में, “जल जीवन मिशन” (2024 तक हर ग्रामीण घर में नल का पानी उपलब्ध कराने का लक्ष्य) और “नमामि गंगे” जैसे कार्यक्रम जल की कमी और नदी का कायाकल्प कर रहे हैं। सरकार कचरे को अधिक कुशलता से प्रबंधित करने के लिए कचरे से ऊर्जा परियोजनाओं और एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को भी बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त, भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) जैसे वैश्विक मंचों पर सक्रिय रूप से भाग लेता है, जो सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने और वैश्विक पर्यावरणीय कल्याण के लिए सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।

भारत के सतत विकास की दूरदृष्टि को साकार करने के लिए, नीति-निर्माण और जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन - दोनों चरणों में मौजूदा कमियों को दूर करना महत्वपूर्ण है। नीतिगत स्तर पर, खंडित प्रयासों से बचने के लिए विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के बीच समन्वय और अभिसरण को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य की आवश्यकता है। नियामक प्रवर्तन और जवाबदेही को बढ़ाना सर्वोपरि है, जिसके लिए प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ सख्त उपाय और अधिक मजबूत, पारदर्शी पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ईआईए) प्रक्रियाओं की आवश्यकता है। नीति कार्यान्वयन की प्रगति की निगरानी करने के लिए एक प्रशासनिक तंत्र स्थापित करने और डेटा संचालित नीति निर्माण के लिए विश्वसनीय डेटा में निवेश करना आवश्यक है, क्योंकि सटीक और सुलभ डेटा की कमी अक्सर प्रभावी योजना और मूल्यांकन में बाधा डालती है। राजनीतिक चक्रों से परे दीर्घकालिक योजना की निरंतरता सुनिश्चित करना और हरित वित्तपोषण और निवेश को आकर्षित करने के लिए अनुकूल नीतियां बनाना भी इन महत्वाकांक्षी पहलों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। वर्तमान में, एनसीएपी जैसे कुछ लक्ष्यों पर प्रगति इन प्रणालीगत मुद्दों के कारण अपेक्षा से धीमी रही है, जिसमें अपर्याप्त अंतर-मंत्रालयी तालमेल और राज्यों और उद्योगों में

समान रूप से नियमों को लागू करने में चुनौतियाँ शामिल हैं।

जमीनी स्तर पर, आम जनता, विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित समुदायों के बीच व्यापक जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है। स्वच्छ प्रौद्योगिकियों और नवाचार को अपनाना महत्वपूर्ण है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, कचरे से मूल्यवर्धित वस्तुओं के माध्यम से तकनीकी विकास पर बढ़ता ध्यान दिया जा रहा है, जैसे प्लास्टिक के निर्माण सामग्री में उन्नत रीसाइक्लिंग, प्लास्टिक कचरे से ईंधन उत्पादन के लिए पायरोलिसिस, और बायोमीथेनेशन संयंत्र जो जैविक कचरे को ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं। इसके अलावा, जल की कमी और प्रदूषण को दूर करने के लिए मेम्ब्रेन फिल्ट्रेशन (एमएफ/यूएफ/आरओ) और जीरो लिक्विड डिस्चार्ज (जेडएलडी) सिस्टम जैसी अभिनव जल उपचार प्रौद्योगिकियों को बढ़ाया जा रहा है। स्मार्ट सिटी पहल वास्तविक समय में पर्यावरणीय निगरानी (वायु गुणवत्ता, यातायात, अपशिष्ट स्तर) के लिए आईओटी सेंसर का लाभ उठा रही हैं और कुशल ऊर्जा वितरण के लिए स्मार्ट ग्रिड लागू कर रही हैं। उद्योगों में ऊर्जा दक्षता में सुधार के लिए अपशिष्ट ताप पुनर्प्राप्ति (डब्ल्यूएचआर) प्रणालियों को भी तैनात किया जा रहा है। कृषि में, हाइड्रोपोनिक्स जल-कुशल, कीटनाशक-मुक्त खाद्य उत्पादन के लिए एक व्यवहार्य और स्केलेबल समाधान के रूप में उभर रहा है, खासकर शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में। स्थानीय समुदायों के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना, अपशिष्ट प्रबंधन, जल उपचार और सार्वजनिक परिवहन के लिए बुनियादी ढांचे का विकास और आधुनिकीकरण करना, और हरित कार्यबल के लिए क्षमता निर्माण और कौशल

विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा देना सभी महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त, एक हरित भवन पहल आवश्यक है। इस पहल की व्यवहार्यता और मापनीयता, लागत-प्रभावशीलता, स्थानीय सामग्री प्रबंधन और सार्वजनिक स्वीकृति जैसे कारकों पर विचार करते हुए, इसके व्यापक उपयोगिता और प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। अंत में, व्यक्तिगत स्तर पर सतत जीवन शैली को प्रोत्साहित करना, सचेत उपभोग, पुनर्चक्रण, पुनः व्यवहार उपयोगी और ऊर्जा संरक्षण पर जोर देना, समग्र पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

पर्यावरण परिवर्तन भारत के लिए एक बहुआयामी चुनौती है, लेकिन देश ने इसे जूझने के लिए एक मजबूत और सक्रिय दृष्टिकोण अपनाया है। नवीकरणीय ऊर्जा, प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के माध्यम से, भारत एक सतत और पर्यावरण के अनुकूल भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा रहा है। यह केवल लक्ष्यों को प्राप्त करने से कहीं अधिक है; यह एक ऐसी दूरदृष्टि है जो आर्थिक विकास, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सामाजिक समानता को समग्र रूप से एकीकृत करती है, जो पृथ्वी पर सभी जीवन रूपों को गले लगाती है। जबकि नीतिगत और जमीनी स्तर पर चुनौतियाँ बनी हुई हैं, भारत की अटूट प्रतिबद्धता और विविध पहल वैश्विक पर्यावरणीय प्रयासों और सतत विकास के व्यापक एजेंडे में एक महत्वपूर्ण योगदान का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अपने सभी नागरिकों और स्वयं प्रकृति माँ के लिए एक बेहतर, अधिक तन्यक और न्यायसंगत कल के लिए मार्ग प्रशस्त करती हैं।





अंकित बागडे
सहायक कुलसचिव

किताबें: सोच का संचार, समाज का आधार

**"एक किताब, एक कलम, एक बच्चा और एक शिक्षक
- दुनिया को बदल सकते हैं।"**

- मलाला युसुफ़ज़ई

प्रचलित मान्यता है कि दिन के अंत में कुछ न कुछ अवश्य पढ़ना चाहिए। अध्ययन केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मविकास, विवेक और सामाजिक चेतना का भी स्रोत है। किताबें हमारी सच्ची साथी होती हैं-न वे कभी साथ छोड़ती हैं, न ही भ्रमित करती हैं। भारत जैसे देश में पुस्तकों का महत्व और उनके माध्यम से ज्ञान अर्जन की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है। यही कारण है कि यहाँ विश्वविख्यात पुस्तकालयों की स्थापना जैसे - तक्षशिला, विक्रमशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों में हुई, जिनमें अध्ययन हेतु विदेशों से विद्वान आया करते थे।

किसी भी सभ्यता की प्रगति को उस समाज में लिखी गई पुस्तकों और उनके पठन-पाठन की नियमितता से आंका जा सकता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि जिस देश में लोग अधिक पठन करते हैं, वह राष्ट्र विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहता है।

एक अंतरराष्ट्रीय सर्वेक्षण में यह तथ्य सामने आया है कि कुछ विकसित देशों में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष औसतन 25 से 30 पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। आश्चर्य नहीं कि इन्हीं देशों में प्रति लाख जनसंख्या पर नोबेल पुरस्कार विजेताओं की संख्या भी अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सतत अध्ययन और पठन व्यक्ति के बौद्धिक विकास को प्रेरित करता है और उसमें नवीन विचारों

को साकार करने की ऊर्जा भरता है।

जो समाज अध्ययन की महत्ता को समझता है, वह सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना को भी उतना ही महत्व देता है। ऐसे समाज हमेशा प्रगतिशील और विचारशील होते हैं।

विद्वानों द्वारा रचित अध्ययन-साहित्य वर्षों के अनुभव और शोध का निष्कर्ष होता है। पाठक जब इन पुस्तकों को पढ़ता है, तो वह थोड़े समय में ही वह ज्ञान अर्जित कर सकता है, जिसे लेखक ने जीवनभर की साधना से पाया। इस प्रकार, पठन-पाठन व्यक्ति को न केवल विषय में दक्ष बनाता है, बल्कि उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देता है।

यदि हम विकसित राष्ट्रों का अध्ययन करें, तो यह सहज रूप से ज्ञात होता है कि जिन्होंने शिक्षा और अध्ययन को प्राथमिकता दी, वे आज ज्ञान-सम्पन्न और समृद्ध राष्ट्रों की श्रेणी में हैं।

पुस्तकों के प्रकार भी विविध होते हैं-कुछ शुद्ध ज्ञानवर्धक होती हैं, तो कुछ मनोरंजक। यह धारणा कि मनोरंजक साहित्य पढ़ना समय की बर्बादी है, पूर्णतः भ्रम है। वास्तव में, ऐसे साहित्य से भाषा, व्याकरण, रस तथा अभिव्यक्ति का अप्रत्यक्ष विकास होता है।

अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पढ़ना-चाहे किसी भी प्रकार का हो-व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार है। प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कुछ न कुछ अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि वह न केवल अपने भीतर, बल्कि समाज में भी सकारात्मक परिवर्तन ला सके।



प्रदीप कुमार पोद्दार
जन स्वास्थ्य निरीक्षक

स्वच्छता: एक उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण की नींव

स्वच्छता किसी भी संस्थान की गरिमा, संस्कृति और मूल्यों का परिचायक होती है। यह केवल स्वास्थ्य का रक्षक नहीं, बल्कि शैक्षणिक वातावरण को सकारात्मक, प्रेरणादायी और अनुशासित बनाए रखने का आधार है। आईआईटी भुवनेश्वर, जो देश के अग्रणी तकनीकी संस्थानों में से एक है, स्वच्छता को अपनी प्राथमिकताओं में सर्वोपरि स्थान देता है। यहाँ न केवल शिक्षण और अनुसंधान के उच्च मानक स्थापित किए गए हैं, बल्कि स्वास्थ्य और स्वच्छता की दृष्टि से भी संस्थान एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

लगभग 936 एकड़ में फैले इस विशाल परिसर में शैक्षणिक भवनों, शोध प्रयोगशालाओं, छात्रावासों, प्रशासनिक खंडों, आवासीय क्षेत्रों, कैफेटेरिया, खेल परिसर और सामुदायिक स्थानों की सफाई एक सतत चुनौती है, जिसे स्वास्थ्य और स्वच्छता इकाई पूरी प्रतिबद्धता और

दक्षता के साथ निभा रही है। संस्थान के प्रत्येक क्षेत्र के लिए अलग-अलग कार्य-योजनाएं बनाई गई हैं। शैक्षणिक भवनों में कक्षाओं, प्रयोगशालाओं और गलियारों की दिन में कई बार सफाई की जाती है, वहीं छात्रावासों में शौचालय, स्नानघर और सामान्य क्षेत्रों की नियमित सफाई सुनिश्चित की जाती है। प्रशासनिक और आवासीय क्षेत्रों में उद्यानों और आसपास के मार्गों की सफाई के साथ-साथ कूड़ेदानों की देखरेख भी सतत रूप से की जाती है।

स्वास्थ्य और स्वच्छता इकाई द्वारा आधुनिक तकनीकी उपकरणों का प्रयोग कार्य को और अधिक प्रभावी बनाता है। ऑटो स्क्रबर ड्रायर, उच्च दबाव जेट, एकल डिस्क स्क्रबर और वैक्यूम क्लीनर जैसी मशीनें न केवल सफाई की गुणवत्ता को बेहतर बनाती हैं, बल्कि श्रम और समय की भी बचत करती हैं।

परिसर की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए हमारी इकाई द्वारा एकीकृत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली पर भी कार्य किया जा रहा है, जिसमें कचरा पृथक्करण (सूखा-कचरा और गीला-कचरा) के साथ-साथ कचरे के वैज्ञानिक निपटान पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। हम परिसर में प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाने की दिशा में भी सक्रिय हैं। सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध की नीति लागू कर दी गई है और इसके लिए जन-जागरूकता अभियान चलाए गए हैं ताकि छात्र, कर्मचारी और आगंतुक सभी इस नीति का पालन करें।

आईआईटी भुवनेश्वर की हरियाली को बनाए रखना भी हमारे प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। संस्थान द्वारा नियमित रूप से वृक्षारोपण अभियान आयोजित किए जाते हैं, जिसमें विद्यार्थियों और कर्मचारियों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाता है।

हालाँकि यह कार्य आसान नहीं है। कई बार वॉशरूम के अनुचित उपयोग, कूड़ेदानों का सही इस्तेमाल न होने, भारी बारिश में जलभराव और सीमित संसाधनों में स्वच्छता के उच्च मानक बनाए रखने जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं। फिर भी, हमारी टीम पूरे समर्पण के साथ निरंतर कार्यरत है। इन समस्याओं के समाधान हेतु संस्थान में फीडबैक आधारित निरीक्षण प्रणाली अपनाई गई है, जिसमें छात्र और स्टाफ सफाई संबंधी समस्याओं की तुरंत सूचना दे सकते हैं।

यह समझना आवश्यक है कि स्वच्छता केवल एक इकाई या विभाग की जिम्मेदारी नहीं है। यह हम सभी की साझी जवाबदेही है – चाहे वह कर्मचारी हो, छात्र हो या आगंतुक। यदि हम सभी मिलकर प्रयास करें – कचरे को डस्टबिन में डालें, शौचालयों का सही प्रयोग करें, तंबाकू और थूक जैसी आदतों से दूर रहें और किसी भी गंदगी की सूचना समय रहते दें – तो हमारा परिसर और अधिक स्वच्छ, सुंदर और प्रेरणास्पद बन सकता है।

स्वच्छता के महत्व को संस्थान के प्रत्येक सदस्य तक पहुँचाने के लिए समय-समय पर संस्थान द्वारा स्वच्छता जागरूकता अभियान, चित्रकला प्रतियोगिता, स्वच्छ परिसर अभियान और स्वच्छता सप्ताह जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें छात्रों की भागीदारी सराहनीय रही है और इसने स्वच्छता को केवल एक दायित्व न रहकर, एक आदत और संस्कार बना दिया है।

आईआईटी भुवनेश्वर की स्वच्छता व्यवस्था तकनीक, समर्पण और सहयोग का एक सुंदर समन्वय है। यदि हम स्वच्छता को अपनी आदत बना लें, तो निःसंदेह यह परिसर न केवल शिक्षा में, बल्कि स्वच्छता में भी उत्कृष्टता की मिसाल बन जाएगा। हमारा लक्ष्य केवल साफ-सुथरा परिसर नहीं, बल्कि एक ऐसा वातावरण बनाना है जहाँ स्वस्थ शरीर, सकारात्मक सोच और निर्मल आचरण का विकास हो क्योंकि जहाँ स्वच्छता, वहाँ स्वास्थ्य और सफलता।





सत्यव्रत घोष
सहायक कुलसचिव

मोबाइल: जीवन का साधन या बंधन

21वीं सदी तकनीकी क्रांति की सदी है। इस युग में मानव जीवन जितना तेज़, गतिशील और सुविधाजीवी हुआ है, उतनी ही तेजी से उसमें चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। इन सभी परिवर्तनों के केंद्र में जो

एक उपकरण सबसे प्रभावशाली रूप से उभरा है, वह है मोबाइल फोन। यह उपकरण अब केवल संचार का साधन नहीं रहा, बल्कि जीवन के हर पहलू—व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक—में गहराई से शामिल हो चुका है।

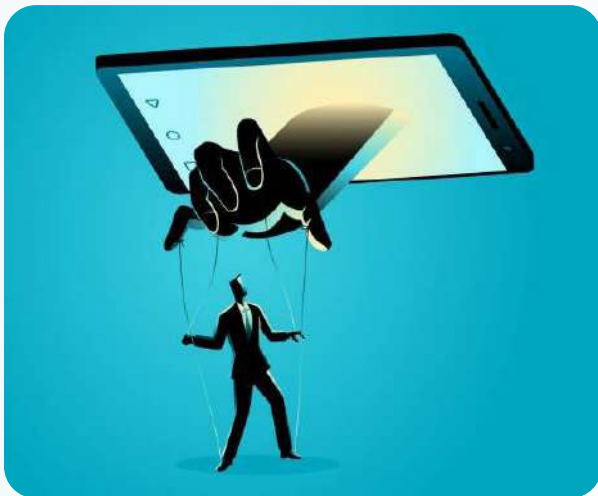
मोबाइल फोन का आविष्कार मुख्यतः इस उद्देश्य से हुआ था कि व्यक्ति चाहे कहीं भी हो, वह अपने सगे-संबंधियों, मित्रों और सहकर्मियों से जुड़ा रह सके। यह सोच अत्यंत व्यावहारिक और मानवीय थी। मोबाइल ने असीमिती दूरियों को समाप्त कर दिया, कई समस्याओं का समाधान दिया और एक नया वैश्विक समाज निर्मित किया। इंटरनेट की सुविधा ने इसे और भी शक्तिशाली बना दिया—अब केवल बात करना ही नहीं, पढ़ाई, कामकाज, मनोरंजन,

बैंकिंग, खरीदारी, चिकित्सा सेवा और यहाँ तक कि शासन-प्रशासन से संवाद भी इस छोटे से यंत्र के माध्यम से संभव हो गया है।

लेकिन हर तकनीक तब तक ही लाभकारी होती है जब तक उसका संतुलित उपयोग हो। जैसे ही इसकी सीमाएँ टूटती हैं, वही तकनीक धीरे-धीरे बंधन का रूप लेने लगती है। मोबाइल फोन भी अब इसी संकट से जूझ रहा है।

आज स्थिति यह है कि अधिकांश लोग—बच्चे, किशोर, युवा, कर्मचारी, गृहिणियाँ, यहाँ तक कि बुजुर्ग भी—मोबाइल पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं। जब तक फोन हाथ में न हो, बेचैनी बनी रहती है। बात करने के अलावा अब इसका बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया, वीडियो प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन गेम्स और चैटिंग ऐप्स ने ले लिया है। वास्तविक संवाद कम हुआ है और आभासी संवाद का दायरा बढ़ गया है।

मोबाइल का यही बढ़ता हुआ उपयोग अब लत का रूप लेता जा रहा है। यह लत न केवल हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, बल्कि शारीरिक समस्याओं को भी जन्म दे रही है। आंखों की रोशनी कम होना, नींद में



कमी, ध्यान की कमी, सिरदर्द, थकान जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं।

शोध यह भी बताते हैं कि मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से मानव मस्तिष्क में वही रासायनिक प्रतिक्रियाएँ होती हैं, जैसी किसी मादक पदार्थ की लत में देखी जाती हैं। विशेष रूप से किशोर और युवा वर्ग इस मानसिक दबाव से अधिक प्रभावित हो रहा है।

वह उम्र जिसमें ऊर्जा, कल्पना, सृजन और सीखने का स्वर्ण अवसर होता है, उसमें मोबाइल द्वारा संचालित एक एकाकी, सतही और कृत्रिम जीवनशैली जन्म ले रही है।

मोबाइल ने एक ओर जहाँ दुनियाभर की जानकारी कुछ सेकंड में हमारी उंगलियों पर ला दी है, वहीं यह भी देखा गया है कि लोगों के बीच संवाद घटा है, आत्मीयता कम हुई है और पारिवारिक संबंधों में खालीपन बढ़ा है।

एक समय था जब शाम को परिवार एकसाथ बैठकर बातें करता था, हँसी होती थी, अनुभव साझा होते थे। अब वह दृश्य मोबाइल की स्क्रीन के पीछे छिप गया है। एक ही कमरे में चार लोग हैं, लेकिन सभी अपनी-अपनी स्क्रीन में खोए हुए हैं। यह पारिवारिक और सामाजिक अलगाव चिंता का विषय है।

यही कारण है कि अनेक मामलों में मोबाइल अप्रत्यक्ष रूप से अवसाद, अकेलापन, क्रोध और आत्महत्या जैसे गंभीर मानसिक परिणामों से जोड़ा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त यह भी देखने में आया है कि मोबाइल की वजह से पढ़ाई का स्तर भी प्रभावित हुआ है। बच्चे ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते, हर समय मोबाइल देखने की आदत उन्हें न पढ़ाई में मन लगाने देती है, न खेल-कूद या सामाजिक व्यवहार में। शिक्षा, जो चरित्र निर्माण का माध्यम होती है, वह मोबाइल के अत्यधिक उपयोग से प्रभावित हो रही है।

यहाँ यह बात भी उतनी ही महत्वपूर्ण है कि समाधान पूरी तरह मोबाइल को त्यागना नहीं है। यह युग तकनीक का युग है और मोबाइल हमारे जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है। इसका सही उपयोग करना ही समझदारी है।

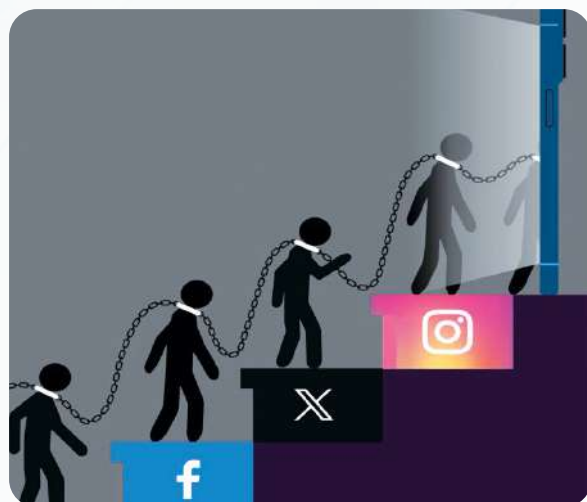
हमें यह समझना होगा कि मोबाइल हमारे जीवन का साधन है, न कि जीवन का उद्देश्य। यह हमारे कार्यों को आसान बनाने के लिए है, हमारे रिश्तों को दूर करने के लिए नहीं। हमें स्वयं तय करना होगा कि हम मोबाइल को कितना समय दें, और अपने परिवार, मित्रों, स्वास्थ्य व आत्मविकास को कितना समय दें। अतः,

मोबाइल को जेब में रखें, दिमाग और दिल में नहीं।

तकनीक को साधन बनाएं, बंधन नहीं।

सच्ची खुशी रिश्तों में है, स्क्रीन की रोशनी में नहीं।

अंततः कहना न होगा कि हमें जीवन में एक संतुलन बनाना होगा - जहाँ मोबाइल भी हो, लेकिन सीमित; और संबंध, संवाद और संवेदनाएँ प्राथमिक भी हों।





दीपक शर्मा
कनिष्ठ लेखाकार



कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

हर भोर अपने साथ एक नवीन ऊर्जा, एक नई प्रेरणा और असीम संभावनाओं की सौगात लेकर आती है। यह वही क्षण होता है जब व्यक्ति अपने भीतर निहित सामर्थ्य को पहचानकर अपने लक्ष्यों की ओर पहला दृढ़ कदम बढ़ाता है।

जीवन का स्वभाव ही संघर्षमय है। कभी राहें ऊबड़-खाबड़ होती हैं, तो कभी बौझ असहनीय प्रतीत होता है। परंतु व्यक्ति की असली पहचान विपरीत परिस्थितियों में ही निखरती है। जो घबराता नहीं, झुकता नहीं, वही जीत की ओर अग्रसर होता है।

हमारे चारों ओर का संसार कई बार हमें यह यक्रीन दिलाने का प्रयास करता है कि हम कुछ कर पाने में सक्षम नहीं हैं - कि हमारी सीमाएँ ही हमारी परिभाषा हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि सफलता केवल बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि अंतर्मन की प्रबल इच्छाशक्ति से हासिल होती है।

कई बार हमें लगता है कि हम किसी विशेष कार्य के योग्य नहीं हैं, पर जब हम निरंतर प्रयास करते हैं, तो वही कार्य साध्य हो जाता है। असफलताएँ आती हैं, पर वे हमारे पथ की बाधा नहीं, बल्कि अनुभव की सीढ़ियाँ होती हैं।

सफलता किसी एक प्रयास की मोहताज नहीं होती।

वह मिलती है बार-बार गिरने, फिर उठने, खुद को संजोने और दुबारा चल पड़ने की अदम्य जिजीविषा से। यही सतत प्रयत्नशीलता हमें असंभव को संभव करने की ओर ले जाती है।

हमें चाहिए कि हम अपने आत्मबल पर विश्वास करें। कोई भी कार्य असंभव नहीं, यदि हमने उसे पूरे मन, संयम, धैर्य और संकल्प के साथ करना तय कर लिया हो। जब मन स्थिर हो, विचार सकारात्मक हों और प्रयास निरंतर हों, तब सफलता केवल समय की बात रह जाती है।

हमारा शरीर भले ही सीमित हो, पर हमारी इच्छाशक्ति असीमित है। हम अपनी सीमाओं को पार कर सकते हैं - बशर्ते हम ठान लें कि रुकना नहीं है। ऐसे ही लोग आगे चलकर दूसरों के लिए प्रेरणा बनते हैं।

हर विद्यार्थी, हर कर्मि और हर जीवनपथ पर बढ़ता व्यक्ति यह समझ ले कि प्रयास करना कभी व्यर्थ नहीं जाता। हर बार किया गया प्रयास हमें मंज़िल की ओर एक कदम और आगे बढ़ाता है।

हमें अपनी क्षमताओं को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। आत्म-विश्वास, परिश्रम और निरंतरता - ये तीन दीपक हैं, जो अंधकार में भी मार्गदर्शन करते हैं।

एक कदम



डॉ अपर्णा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक

आज मैं अपने जीवन का ऐसा अनुभव साझा करने जा रही हूँ जो बहुत ही अनमोल है। ये बात है उन दिनों की जब मैं अपने पहले पुत्र के जन्म के बाद अपना अनुसंधान का कार्य शुरू किया था। एक बहुत ही प्रसिद्ध अनुसंधान केंद्र में मैं एसआरएफ के पद पर कार्यरत हुई। कहते हैं जन्म के बाद माँ का भी दूसरा जन्म होता है। यह मुझे तब ज्ञात हुआ जब मुझे अनेक भूमिकाएं एक साथ निभानी होती थी। माँ, पत्नी, बहु, शोधकर्ता, विद्यार्थी, बच्चे के लिए चिकित्सक, अध्यापक, न जाने क्या-क्या। सुबह 5 बजे से कब रात के 11 हो जाते थे, पता ही न चलता। ये सब भी ठीक था, पर जब पुत्र को दिन की देखभाल के लिए डे केयर भेजने की बारी आयी तो कुछ समझ ही न आता था कि कैसी व्यवस्था को प्राथमिकता दी जाये। मेरे कार्य की जगह के पास होना ज्यादा उचित है या बच्चे को कम से कम यात्रा करवाना उचित होगा। बड़ी जगह सही होगी या छोटी, पर जानकारी वाले लोगों के साथ रखना सही होगा। ऐसी बहुत सी दुविधा वाले विचारों से मन भर आता था।

एक बार तो कार्य की जगह के पास वाले डे केयर पर ले गयी। एक दो दिन ही हुए थे। मेरा बच्चा खूब रोता सुनाई पड़ता था। बाहर तक आवाज गूंजती रहती। सभी ने कहा कुछ समय लगेगा अभ्यस्त होने में। बेटा तो शायद अभ्यस्त भी हो जाता पर मैं कैसे सुन सकती थी। वो अंदर रो रहा होता और मैं बाहर। कुछ सूझ नहीं रहा था। फिर तलाश शुरू की एक अच्छे डे केयर की। कई जगहें ले गईं उसे पर वो मुझे छोड़कर कही नहीं गया।

अंत में एक ऐसी जगह मिली जहाँ वो खुद ही खेलने

गया। शायद यही मेरी तालाश का अंत था। फिर तब से 2 साल तक वो वहा जाता रहा। बोलना, अपने से खाना, अपने दूसरे काम खुद करना उसने वहीं से सीखा। पहले तो बहुत ग्लानि होती थी कि मैं माँ का दायित्व पूरी तरह नहीं निभा रही हूँ पर जब बेटे का विकास पूर्णरूप से होते देखा तो समझ आया कि बच्चे के सही और स्वतंत्र विकास के लिए कुछ समय उसे माँ से दूर होना आवश्यक है। पूरा समय माँ के साथ रहकर वह निर्भर ही बना रहता। ऐसी व्यवस्था में जाकर उसका चहुँओर विकास हो रहा था। अपनी जरूरतों को बताना, अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखना और संजनात्मक विकास का बढ़ते जाना एक संपूर्ण विकास को दिखा रहा था। इन सारे सुखद अनुभवों ने ग्लानि को खत्म तो नहीं किया पर कम जरूर किया।

इन सब में ये भी समझ आया कि कार्य स्थल पर एक अच्छे डे केयर का होना बहुत ही आवश्यक है।

अब इतने वर्षों के पश्चात जब सोचती हूँ अगर मैंने वो कठिन कदम न उठाया होता तो आज एक समझदार, भावनात्मक और स्वतंत्र बालक न पाती। वो शायद निर्भर ही रह जाता जो आगे आने वाले समय के लिए भी उचित नहीं था। आज मैं उसे एक ऐसे इंसान के रूप

में देख पाती हूँ जो सही मायने में लैंगिक समानता को समझता है। वो जानता है। चाहे माँ खाना बनाये या पिता एक ही बात है। चाहे माँ हो या पिता दोनों का ही काम जरूरी है। ये बदलाव आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए वरदान होगा। जब किसी के कार्य की पहचान उसके लिंग से नहीं योग्यता से होगी और इसमें कोई अचरज नहीं करेगा कि महिला हो या पुरुष सबकी अपनी अलग पहचान है। सभी अतुलनीय हैं। सभी एक समान हैं। और सबसे महत्वपूर्ण सभी के सपने और इच्छाएँ एक समान और पूर्ण करने योग्य हैं। मुझे गर्व की अनुभूति होती है कि यह बदलाव मेरे घर से मेरी पीढ़ी से शुरू हुआ। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता पर अच्छी शुरुआत एक घर से ही शुरू होती है। तभी समाज का पूर्ण विकास भी होता है।





भीड़ में ठहरी नज़रें: मेरी 'सुनावेश' यात्रा



सत्यजित षडंगी
सहायक कुलसचिव

पुरी की पावन धरती पर भगवान श्रीजगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं देवी सुभद्रा के 'सुनावेश' का दर्शन, मेरे लिए किसी अलौकिक आशीर्वाद से कम नहीं रहा। 6 जुलाई 2025 की वह दोपहर मेरे जीवन की स्मृति-पट पर सदा के लिए अंकित हो गई है - एक ऐसी आध्यात्मिक अनुभूति, जिसकी छवि न तो धुंधली पड़ सकती है और न ही शब्दों में पूरी तरह उतर सकती है।

यह मेरा पहला सुनावेश अनुभव था - एक ऐसा उत्सव, जिसमें भगवान को स्वर्णाभूषणों और दिव्य परिधान से सुसज्जित किया जाता है। अनुमानतः इस बार लगभग 10 लाख श्रद्धालु इस दिव्य क्षण के साक्षी बनने के लिए पुरी पहुँचे थे। भारी भीड़, संभावित भगदड़, और तेज़

बारिश की आशंका के बावजूद मैंने अपनी धर्मपत्नी और पुत्री संग इस यात्रा का निश्चय किया - मन में केवल श्रद्धा और विश्वास।

हमने एक वृद्ध ड्राइवर द्वारा चलाए जा रहे इलेक्ट्रिक ऑटो में यात्रा प्रारंभ की। उनकी आँखों में अपार आत्मविश्वास और मुस्कान में असीम शांति थी। उन्होंने सहज भाव से कहा - "मैं आपको रथ के पास पहुँचा दूँगा, चिंता मत कीजिए।" आश्चर्यजनक रूप से उन्होंने हमें सीधे रथ के समीप पहुँचा दिया। जब हम धन्यवाद कहने को मुड़े, वे भीड़ में कहीं गायब हो चुके थे। उस क्षण मुझे लगा, मानो स्वयं भगवान ने उन्हें भेजा हो, हमारे मार्गदर्शक बनकर।

दोपहर लगभग 4:30 बजे हम बड़ा दंड (ग्रैंड रोड) पहुँचे। आकाश में बादल मंडरा रहे थे, किंतु ईश्वर की कृपा से वर्षा थम गई थी। भक्तों के समूह 'जय जगन्नाथ' के जयघोष के साथ आगे बढ़ रहे थे, प्रसाद, भजन, मंजीरे,

ढोलक – सब कुछ मिलकर एक आध्यात्मिक संगीत रच रहे थे। इस दिव्य वातावरण में हम भी लीन होते चले गए।

लगभग ढाई घंटे की कठिन यात्रा के उपरांत जब मैंने पहली बार भगवान जगन्नाथ के रथ को देखा और उनके नेत्रों से साक्षात् संपर्क हुआ, तो मेरे रोम-रोम में भक्ति की एक अव्याख्येय लहर दौड़ गई। नेत्रों से अश्रु बहने लगे और मन से केवल यही निकला – “जय जगन्नाथ स्वामी नयन पथगामी भव तुमे!” मैंने वहीं साष्टांग दंडवत प्रणाम किया।

उसके बाद हमने देवी सुभद्रा एवं भगवान बलभद्र के रथों का भी दर्शन किया। देव विग्रहों की दिव्यता और गरिमा इतनी मोहक थी कि मैं मंत्रमुग्ध हो गया। ऐसा लगा मानो देवत्व स्वयं मेरे सम्मुख प्रकट हो गया हो। यह दृश्य स्वप्नलोक से भी सुंदर था।

जैसे-जैसे रात गहराने लगी और भीड़ घनी होने लगी, हमने वापसी का निर्णय लिया। जैसे ही हम टैक्सी स्टैंड के निकट पहुँचे, अचानक मूसलधार वर्षा शुरू हो गई - पूरा वातावरण भीग उठा, परंतु आश्चर्यजनक रूप से हमें भीड़ में ही एक ऑटो रिक्शा मिल गया और रात 9:30 बजे हम सुरक्षित अपने गंतव्य पर लौट आए।

इस सम्पूर्ण यात्रा में बार-बार यही अनुभूति होती रही कि भगवान स्वयं हमारे साथ चल रहे हैं - हर मोड़ पर, हर भीड़ में, हर कठिनाई में। यह केवल एक तीर्थयात्रा नहीं थी, बल्कि आत्मा की यात्रा थी - ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की, भक्ति की, और उनकी कृपा के साक्षात् प्रमाण की।

यह अनुभव शब्दों की सीमा से परे है। मैं अपने हृदय की गहराइयों से भगवान जगन्नाथ का आभार प्रकट करता हूँ कि उन्होंने मुझे और मेरे परिवार को यह दिव्य दर्शन कराया और अपनी कृपा की वर्षा से अभिसिंचित किया।

जय जगन्नाथ!





तीर्थ के चरण: जगन्नाथ मंदिर की पवित्र 22 सीढ़ियाँ



प्रदीप कुमार बेहेरा
कनिष्ठ अधीक्षक

पुरी के पवित्र श्री जगन्नाथ मंदिर में स्थित बाईस पहाच, यानी 22 सीढ़ियाँ, केवल मंदिर के गर्भगृह तक जाने का मार्ग नहीं हैं, बल्कि आत्मा के परमात्मा तक पहुँचने की आध्यात्मिक सीढ़ियाँ हैं। सिंहद्वार से प्रारंभ होकर ये सीढ़ियाँ भक्तों को उस स्थान तक ले जाती हैं, जहाँ भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा का दर्शन संभव होता है। यह केवल भौतिक यात्रा नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धिकरण और चेतना की उन्नति की प्रतीक है। हर एक सीढ़ी मानव जीवन की एक कमजोरी, एक साधना या एक मूल्य को दर्शाती है, जिसे पार कर भक्त भगवान के समक्ष आत्मसमर्पण की स्थिति में पहुँचता है।

पहली सीढ़ी अहंकार पर नियंत्रण की प्रतीक है। यह उस क्षण को दर्शाती है जब भक्त मंदिर में प्रवेश करते ही अपनी सांसारिक पहचान को छोड़, स्वयं को दीनभाव से ईश्वर के चरणों में समर्पित करता है। दूसरी सीढ़ी लोभ से मुक्त होने का प्रतीक है, जहाँ आत्मा यह समझती है कि सांसारिक वस्तुएँ क्षणिक हैं और वास्तविक सुख प्रभु में ही है। तीसरी सीढ़ी यमशिला कहलाती है, जिसमें एक विशेष पत्थर जड़ा हुआ है। मान्यता है कि चढ़ते समय इस पर पाँव रखने से यमराज के दंड से मुक्ति मिलती है, जबकि उतरते समय पैर रखने से पुण्य का हास होता है। यह सीढ़ी मृत्यु और मोक्ष के बीच की अनुभूति का संकेत देती है।

चौथी सीढ़ी इच्छाओं के त्याग की प्रतीक है। यहाँ साधक अपने मन की चंचल कामनाओं पर नियंत्रण का अभ्यास करता है। पाँचवीं सीढ़ी मोह और माया से ऊपर उठने की प्रेरणा देती है। यह बताती है कि जगत भ्रम है,

और जो इसके जाल में फँसता है वह ईश्वर से दूर हो जाता है। छठी सीढ़ी इंद्रियों के संयम की प्रतीक है - यहाँ साधक जानता है कि इंद्रियों की दिशा यदि ईश्वर की ओर हो तो वही मुक्ति का मार्ग बनती है। सातवीं सीढ़ी पर स्थित है प्रेत शिला, जहाँ पिंडदान की परंपरा जुड़ी है। यह स्थान पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, स्मृति और कृतज्ञता का सजीव स्थल है।

आठवीं सीढ़ी क्रोध पर विजय की प्रतीक है, जहाँ भक्त अपने भीतर के आक्रोश को प्रेम और क्षमा में रूपांतरित करता है। नवमी सीढ़ी ईर्ष्या और द्वेष के त्याग का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि भगवान के सन्मुख कोई भेदभाव नहीं होता। दसवीं सीढ़ी मन की स्थिरता की ओर संकेत करती है। यहाँ साधक बाहरी संसार से हटकर अंतरात्मा में ध्यान केंद्रित करता है। ग्यारहवीं से उन्नीसवीं सीढ़ियाँ श्रीमद्भागवतम में उल्लेखित नवधा भक्ति के नौ अंगों की प्रतीक मानी जाती हैं। ग्यारहवीं सीढ़ी श्रवण (भगवान की कथा सुनना), बारहवीं कीर्तन (नाम संकीर्तन), तेरहवीं स्मरण (स्मरण), चौदहवीं पादसेवन (भगवान की सेवा करना), पंद्रहवीं अर्चन (पूजन), सोलहवीं वंदन (नमन), सत्रहवीं दास्य (सेवकभाव), अठारहवीं सख्य (भगवान से सखा भाव) और उन्नीसवीं सीढ़ी आत्मनिवेदन (पूर्ण समर्पण) की ओर ले जाती है।

बीसवीं सीढ़ी ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ साधक यह समझता है कि ईश्वर ही सर्वोपरि सत्य हैं और समस्त जगत उसी से उत्पन्न हुआ है। इक्कीसवीं सीढ़ी वैराग्य की ओर इशारा करती है, जब साधक संसार से पूर्ण रूप से विरक्त हो केवल भगवान की सेवा में रत हो जाता है। अंत में, बाईसवीं सीढ़ी पूर्ण प्रेममयी भक्ति की प्रतीक है, जहाँ आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है, और भक्त भगवान के चरणों में स्थायी शांति और आनंद प्राप्त करता है। यह अंतिम सीढ़ी भक्त की साधना की पराकाष्ठा है - जहाँ वह स्वयं को प्रभु में विलीन कर देता है।

बाईस पहाच न केवल आध्यात्मिक यात्रा का मार्ग है, बल्कि वह स्थान है जहाँ भौतिक और पारलौकिक लोक एकत्र होते हैं। रथयात्रा के समय यह मान्यता है कि यहाँ

मनुष्यों के साथ-साथ पितर आत्माएँ, देवता, यमदूत और चित्रगुप्त भी उपस्थित रहते हैं और भगवान की पहंडी यात्रा के दर्शन करते हैं। इन सीढ़ियों पर दीपावली के अवसर पर 'बड़बड़िया डाका' का आयोजन होता है, जहाँ श्रद्धालु जलते दीपकों को ऊपर की ओर दिखाते हैं, जिससे पितरों को प्रकाश मिलता है। यह परंपरा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवित पितृ-संस्कृति की प्रतीक है।

बाईस पहाच का महत्व विभिन्न धर्मों के समन्वय को भी दर्शाता है। जैन अनुयायी इन 22 सीढ़ियों को अपने 22 तीर्थंकरों का प्रतीक मानते हैं, और वैष्णव संत इन्हें मानव की 22 दुर्बलताओं का प्रतीक मानते हैं जिन पर विजय पाकर ही भक्त भगवान के योग्य बनता है। यह दर्शाता है कि ईश्वर की ओर जाने के मार्ग अनेक हो सकते हैं, परंतु लक्ष्य एक ही है - प्रेम, भक्ति और समर्पण।

इस प्रकार बाईस पहाच केवल मंदिर की सीढ़ियाँ नहीं, बल्कि एक गूढ़ आध्यात्मिक दर्शन हैं। ये सीढ़ियाँ हमें सिखाती हैं कि श्रद्धा, संयम, ज्ञान, भक्ति और पितृभक्ति से ही जीवन सफल होता है। यह हमारी चेतना को ऊपर उठाने वाला वह मार्ग है, जिसमें हर कदम हमें अपने सत्य स्वरूप की ओर ले जाता है। प्रभु जगन्नाथ से यही प्रार्थना है कि वे हमें इन 22 सीढ़ियों पर चढ़ने का साहस, संयम और शुद्ध हृदय प्रदान करें ताकि हम उनके प्रेम और सेवा में अपने जीवन को समर्पित कर सकें।

**हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे,
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।**





सेमीकंडक्टर की उड़ान : भारत की आत्मनिर्भरता



चिरंजीवी पाढ़ी

छात्र

सेमीकंडक्टर जैसे सिलिकॉन, जर्मेनियम, ऐसे पदार्थ हैं जो विशिष्ट परिस्थितियों में बिजली का संचालन करती हैं, जिससे यह आधुनिक तकनीक का आधार बनती है। धातुओं (जैसे - स्वर्ण, चाँदी, तांबा) के विपरीत, जो हमेशा बिजली का संचालन करते हैं, या

आधातु (लकड़ी, प्लास्टिक, ग्लास), जो बिजली को रोकते हैं, सेमीकंडक्टर (अर्धधातु) विद्युत संकेतों को नियंत्रित कर सकते हैं। यह गुण उन्हें हमारी प्रतिदिन उपयोग में आने वाले स्मार्टफोन, कंप्यूटर, सौर पैनल, कार, कैमरा और चिकित्सा उपकरण जैसे उपकरणों के लिए आवश्यक बनाता है, जो संचार, स्वास्थ्य देखभाल और नवीकरणीय ऊर्जा में प्रगति को बढ़ावा देता है। 19वीं शताब्दी में खोजे गए,

सेमीकंडक्टर 1947 में बेल लैब्स में ट्रांजिस्टर के आविष्कार और 1958 में एकीकृत सर्किट के साथ प्रमुखता में आए, जिसने इलेक्ट्रॉनिक्स में क्रांति ला दी। शुरुआती उपकरण भारी और धीमे थे; आज, चिप्स कॉम्पैक्ट और कुशल हैं। पहले जहाँ कंप्यूटर एक कमरे के बराबर होते थे, वहीं आज उन्हें सहजता से जेब में रखा जा सकता है। वर्तमान रुझान 3nm और 2nm नोड्स पर केंद्रित हैं, जो AI, 5G और क्वांटम कंप्यूटिंग को शक्ति प्रदान करते हैं, वैश्विक संयोजकता और नवाचार को बढ़ाते हैं।

वैश्विक सेमीकंडक्टर बाजार का मूल्य 2024 में लगभग ₹56.53 लाख करोड़ था, जो 2025 में ₹62.69 लाख करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है, जिसमें फॉर्च्यून बिजनेस इनसाइड के अनुसार 15.4% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) के साथ 2032 तक ₹171.19 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री एसोसिएशन ने 2024 की बिक्री को लगभग ₹52.09 लाख करोड़ बताया, जो 2023

से 19.1% अधिक है, और 2025 के लिए ₹57.05 लाख करोड़ का अनुमान है। सेमीकंडक्टर एक राष्ट्र की संपत्ति को तकनीक-प्रधान अर्थव्यवस्थाओं के आधार के रूप में आकार देते हैं। अमेरिका, चीन और ताइवान जैसे देश उच्च-मूल्य निर्यात और नवाचार से लाभ उठाते हैं, जिसमें 2024 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र 50.94% बाजार हिस्सेदारी रखता है।

सेमीकंडक्टर के चिप्स जहां बनते हैं उन्हें फैब्रिकेशन प्लांट (फैब्स) या सेमीकंडक्टर फाउंड्री कहते हैं। सेमीकंडक्टर फाउंड्री में अत्यंत जटिल और सूक्ष्म स्तर पर कार्य किया जाता है, जहाँ माइक्रोचिप्स को सिलिकॉन वेफर पर निर्मित किया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया एक वैज्ञानिक तरीके से नियंत्रित वातावरण में किया जाता है जिसे “क्लीनरूम” कहा जाता है। यहाँ हवा में धूल के कणों को जो चिप को खराब कर सकता है को कम से कम कर उन्हें नियंत्रित किया जाता है। सबसे पहले, शुद्ध सिलिकॉन से बनी पतली डिस्क जिसे “वेफर” कहते हैं, तैयार की जाती है और उस पर “फोटोलिथोग्राफी” (प्रकाश के द्वारा मुद्रण की क्रिया) की प्रक्रिया से ट्रेन्जिस्टर, रिजिस्टर, कपाशीटर से बने पूरे सर्किट के डिजाइन को उतारा जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में अत्यधिक पराबैंगनी (extreme UV) प्रकाश, मास्क का उपयोग कर अतिसूक्ष्म पैटर्न वेफर पर बनाए जाते हैं। इसके बाद “एचिंग”, “आयन इम्प्लांटेशन”, आक्सिडेशन, मेटालाइजेशन आदि करीब 1000 चरणों द्वारा चिप को तैयार किया जाता है। इन सभी चरणों के बाद वेफर की गुणवत्ता की जांच होती है और खराब चिप्स को अलग कर दिया जाता है। फिर “डाइसिंग” की प्रक्रिया में वेफर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है और हर टुकड़ा एक अलग चिप होता है। इसके बाद हर चिप को पैकेज किया जाता है ताकि उसे मोबाइल, लैपटॉप, गाड़ी, टीवी जैसे उपकरणों में उपयोग किया जा सके। फाउंड्री में काम करने वाले प्रोसेस इंजीनियर्स (Process Engineers), इक्विपमेंट इंजीनियर्स (Equipment Engineers), क्वालिटी कंट्रोल / एनालिस्ट (Quality Control Engineers),

क्लीनरूम टेक्नीशियंस (Cleanroom Technicians / Operators), डिज़ाइन और टेस्ट इंजीनियर्स (Design & Test Engineers), हाउसकीपिंग और सपोर्ट स्टाफ, मैनेजमेंट और लॉजिस्टिक्स टीम की एक बड़ी टीम होती है जो फाउंड्री को सुचारु रूप से चलाने में मदद करती है। इनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि इलेक्ट्रॉनिक्स, यांत्रिकी, भौतिक विज्ञान, या पदार्थ विज्ञान की होती है।

सेमीकंडक्टर फाउंड्री में उपयोग होने वाले पदार्थ और गैसें अत्यधिक शुद्ध (ultra-pure) होती हैं, क्योंकि नैनोमीटर स्तर पर काम करते समय मामूली अशुद्धि भी चिप की कार्यक्षमता को पूरी तरह से बिगाड़ सकती है। सिलिकॉन, वेफर बनाए जाते हैं, 99.9999999% (या 9N) शुद्धता वाला होता है। इसके अलावा, फाउंड्री में विभिन्न धातुओं और अर्धचालक के लिए तांबा, एल्यूमीनियम, टंगस्टन (Tungsten), टाइटेनियम (Titanium), और कोबाल्ट (Cobalt) जैसी धातुएँ भी उपयोग होती हैं। इसके साथ ही अन्य रासायनिक प्रक्रियाओं के लिए कई गैसों इस्तेमाल की जाती हैं, जैसे साइलेन (SiH_4), फॉस्फीन (PH_3), हाइड्रोजन (H_2), नाइट्रोजन (N_2), ऑक्सीजन (O_2), और क्लोरीन आधारित गैसों। इन सभी गैसों की शुद्धता आम तौर पर 99.9999% (या 6N) या उससे अधिक होती है, ताकि किसी भी स्तर पर अशुद्धि न हो। इसके अलावा सॉल्वेंट्स (जैसे हाइड्रोफ्लोरिक एसिड, सल्फ्यूरिक एसिड, अमोनिया) आदि रसायनों का भी प्रयोग किया जाता है, जो विशेष ग्रेड के होते हैं और केवल सेमीकंडक्टर इंडस्ट्री में उपयोग किए जाते हैं। कुल मिलाकर, फाउंड्री में उपयोग होने वाला हर मटेरियल और गैस अत्यधिक नियंत्रित, शुद्ध और स्पेशलाइज़्ड होता है, ताकि विश्वसनीय (Hi-Fidelity) और परफेक्ट चिप्स का निर्माण संभव हो सके और गलतियों को कम से कम किया जा सके। यह सारा काम नैनोमीटर स्तर पर किया जाता है, यानी एक बाल की मोटाई के हजारवें हिस्से से भी पतले सर्किट बनाए जाते हैं। यही कारण है कि सेमीकंडक्टर फाउंड्री तकनीक

की दुनिया का सबसे बारीक और अत्याधुनिक क्षेत्र मानी जाती हैं। इस कारण से फाउंड्री बनाने में निवेश बहुत बढ़ा होता है। जैसे की ताइवान सेमीकंडक्टर विनिर्माण कंपनी (TSMC) का 3nm-टेक फैब लगभग ₹1.62 लाख करोड़ का है। 2019 में TSMC की एक फैक्ट्री में सिर्फ एक कंटेमिनेटेड केमिकल बैच (यानी जिसमें थोड़ी अशुद्धि थी) का उपयोग हो गया था, जिससे हजारों चिप्स खराब हो गए और इससे लगभग 4,000 करोड़ रुपये का हानि हुई थी। इससे यह पता चलता है कि फाउंड्री में एक थोड़ी से गलती भी अरबों का नुकसान करवा सकती है। लेकिन इसके साथ ही फैब्स रोजगार और तकनीकी नेतृत्व को बढ़ावा देते हैं, लेकिन इसके लिए कुशल कार्यबल और स्थिर संसाधनों की आवश्यकता होती है, जो उन्हें रणनीतिक आवश्यकता बनाता है।

भारत का सेमीकंडक्टर प्रयास आर्थिक और भू-राजनीतिक लाभों के लिए महत्वपूर्ण है। भारत तेज़ी से वैश्विक सेमीकंडक्टर दौड़ में आगे बढ़ रहा है। एएनआई (ANI), (टाइम्स ऑफ इंडिया, 2024) के अनुसार, घरेलू सेमीकंडक्टर बाज़ार जिसकी कीमत ₹3.2 लाख करोड़ (2023) थी, वह 2030 तक ₹10 लाख करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है। 2021 में शुरू हुए इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (ISM) के तहत चिप निर्माण के लिए ₹76,000 करोड़ का प्रावधान किया गया था, जिसमें से लगभग ₹70,000 करोड़ की स्वीकृति पहले ही मिल चुकी है (द हिन्दू, 2025)। प्रमुख परियोजनाओं में धोलेरा में टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स और असम में आउटसोर्सड सेमीकंडक्टर असेंबली एवं परीक्षण इकाई (OSAT) यूनिट शामिल हैं (Tata.com, बिज़नेस टुडे, 2024)। यह पहल केवल पूंजी निवेश तक सीमित नहीं है—इसका उद्देश्य मज़बूत आपूर्ति श्रृंखला, विश्वस्तरीय निर्माण क्षमता और वैश्विक साझेदारियाँ विकसित करना है, जिससे भारत को एक प्रतिस्पर्धी चिप-निर्माण केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सके।

हाल ही में प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) के अनुसार,

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) के तहत चार नए सेमीकंडक्टर विनिर्माण परियोजनाओं को मंजूरी दी, जिनमें कुल निवेश लगभग ₹4,600 करोड़ है। स्वीकृत कंपनियों में ओडिशा में सिक्सेम प्राइवेट लिमिटेड (SiCSem) और 3डी ग्लास सॉल्यूशंस इंक., पंजाब में कॉन्टिनेंटल डिवाइस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (CDIL), और आंध्र प्रदेश में एडवांस्ड सिस्टम इन पैकेज (ASIP) टेक्नोलॉजीज शामिल हैं। विशेष रूप से, सिक्सेम भुवनेश्वर के इन्फो वैली में भारत की पहली वाणिज्यिक सिलिकॉन कार्बाइड (SiC) कंपाउंड सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन इकाई स्थापित करेगा, जिसकी वार्षिक क्षमता 60,000 वेफर्स और 9.6 करोड़ पैकेज्ड इकाइयों की होगी। SiCSem के उत्पाद रक्षा, इलेक्ट्रिक वाहन, रेलवे, और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों को समर्थन देंगे। इन परियोजनाओं से 2,000 से अधिक कुशल रोजगार सृजित होने की उम्मीद है और यह भारत के सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र और आत्मनिर्भर भारत पहल को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देगा। अब तक स्वीकृत कुल आईएसएम परियोजनाओं में छह राज्यों में 10 इकाइयाँ शामिल हैं, जिनमें निवेश लगभग ₹1.60 लाख करोड़ तक पहुँच गया है।

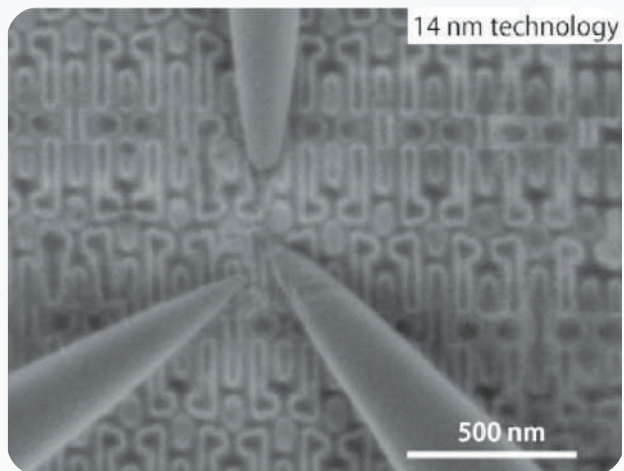
इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) द्वारा अगस्त 2008 में शुरू किया गया इंडियन नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स यूजर्स प्रोग्राम (INUP), शोधकर्ताओं को अत्याधुनिक नैनोफैब्रिकेशन और कैरेक्टराइजेशन सुविधाओं तक पहुँच प्रदान करता है। मूल रूप से IISc बेंगलूर (CENSE) और IIT बॉम्बे में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन नैनोइलेक्ट्रॉनिक्स (CEN) में स्थापित, INUP ने INUP-i2i (आइडिया टू इनोवेशन) चरण (2021–2024) के तहत IIT दिल्ली, IIT मद्रास, IIT गुवाहाटी, और IIT खड़गपुर को शामिल किया। सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन में पीएचडी छात्रों को इलेक्ट्रॉन बीम लिथोग्राफी और रिएक्टिव आयन एचिंग सहित 150 से अधिक उन्नत उपकरणों तक

पहुंच, हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण और मेंटरशिप मिलती है। INUP अल्पकालिक (3 महीने) और मध्यम अवधि (3–24 महीने) परियोजनाओं का समर्थन करता है, जिससे छात्र MEMS, 2D ट्रांजिस्टर, और GaN सेमाइकंडक्टर पर आधारित LED जैसे नवाचारी उपकरण विकसित कर सकते हैं। हजारों शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया है, जिसमें 2024 में मोहाली में 20 छात्र द्वारा डिज़ाइन किए गए चिप्स का निर्माण किया गया। यह कौशल विकास को बढ़ावा देता है, आयात निर्भरता को कम करता है, और भारत के वैश्विक सेमीकंडक्टर नेतृत्व के लक्ष्य के साथ संरेखित होता है।

प्रमुख सेमीकंडक्टर्स में सिलिकॉन, गैलियम आर्सेनाइड (GaAs), गैलियम नाइट्राइड (GaN), और 4H-सिलिकॉन कार्बाइड (4H-SiC) शामिल हैं। सिलिकॉन, CMOS तकनीक में उपयोग किया जाता है, स्मार्टफोन और कंप्यूटर में प्रोसेसर और मेमोरी चिप्स को शक्ति देता है। GaAs, उच्च इलेक्ट्रॉन गतिशीलता के साथ, 5G बेस स्टेशनों और रडार सिस्टम के लिए महत्वपूर्ण है। GaN उच्च-वोल्टेज पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में उत्कृष्ट है, जो इलेक्ट्रिक वाहनों और सौर इनवर्टरों के लिए उपयोगी है। 4H-SiC, एक वाइड-बैंड-गैप सामग्री, बेहतर थर्मल चालकता और दक्षता प्रदान करती है, जो इलेक्ट्रिक वाहन चार्जर, उच्च-शक्ति इनवर्टर, और नवीकरणीय ऊर्जा सिस्टम के लिए उत्कृष्ट है। ये सेमीकंडक्टर्स AI, 5G, रक्षा, और स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देते हैं, जिससे भारत को तकनीकी और आर्थिक प्रगति के लिए इनका लाभ उठाने की स्थिति मिलती है।

एक सेमीकंडक्टर फैब को अति-स्वच्छ कमरों (Ultra Cleanroom; क्लास 100), अत्यधिक पराबैंगनी लिथोग्राफी उपकरणों (मूल्य: \$150 मिलियन), कुशल कार्यबल (VLSI में हजारों इंजीनियर), स्थिर बिजली (100 MW), और उच्च-शुद्धता वाले पानी (2 मिलियन गैलन प्रतिदिन) की आवश्यकता होती है। भारत अपनी वैश्विक चिप डिज़ाइन प्रतिभा में 20% हिस्सेदारी, सिलिका भंडार, और IIT जैसे शैक्षणिक संस्थानों के साथ अच्छी स्थिति में

है, जो योग्य एवं प्रतिभाशाली इंजीनियरों का विकास करते हैं। हालांकि स्थिर बिजली और पानी के बुनियादी ढांचे चुनौतियां पेश करते हैं, भारत का नवीकरणीय ऊर्जा और जल उपचार में निवेश, पावरचिप जैसे साझेदारियों के साथ, 2030 तक आत्मनिर्भरता और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए तत्परता सुनिश्चित करता है। भारत के सेमीकंडक्टर विकास के लिए एक सहायक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक जागरूकता की आवश्यकता है। नागरिकों को स्मार्टफोन से लेकर EVs तक दैनिक तकनीकों में सेमीकंडक्टर्स की भूमिका को MeitY के नेतृत्व वाले अभियानों के माध्यम से समझना चाहिए। उद्योग-अकादमिक सहयोग, जैसे IITs और IISc में INUP का प्रशिक्षण, चिप डिज़ाइन और फैब्रिकेशन के लिए प्रति वर्ष हजारों पीएचडी शोधकर्ताओं को तैयार करता है। मेड-इन-इंडिया इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए सार्वजनिक समर्थन मांग को बढ़ा सकता है, जबकि स्थिर बिजली और पानी जैसे टिकाऊ फैब जरूरतों की जागरूकता सफलता सुनिश्चित करती है। उद्योग, अकादमिक, और जागरूक नागरिकों को एकजुट करके, भारत 2030 तक 10% वैश्विक बाजार हिस्सेदारी के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, जिससे तकनीकी और आर्थिक नेतृत्व सुरक्षित हो सके।



FESEM द्वारा ली गई छवि, जिसमें Samsung Exynos 8895 (10 nm प्रौद्योगिकी नोड) के एक ट्रांजिस्टर के धातु स्तर पर स्थित ड्रेन, सोर्स और गेट से संपर्क में तीन नैनो-प्रोब दिखाए गए हैं। (स्रोत: आईमिना (IMNIA) टेक्नोलॉजीज़)

विज्ञान एवं अनुसंधान संबंधी प्रश्न

प्रश्न 1: नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय वैज्ञानिक कौन थे?

- (क) होमी भाभा
- (ख) जगदीश चंद्र बोस
- (ग) सी. वी. रमन
- (घ) विक्रम साराभाई

प्रश्न 2: हमारे सौरमंडल में किस ग्रह का एक दिन सबसे लंबा होता है?

- (क) बुध
- (ख) शुक्र
- (ग) मंगल
- (घ) बृहस्पति

प्रश्न 3: 'एटोमिक क्लॉक्स' में सामान्यतः कौन-से तत्व का उपयोग किया जाता है?

- (क) सीज़ियम
- (ख) सोडियम
- (ग) बैरियम
- (घ) अमेरिशियम

प्रश्न 4: ऑक्टोपस के खून का रंग क्या होता है और उसके कितने हृदय होते हैं?

- (क) लाल खून, एक हृदय
- (ख) नीला खून, तीन हृदय
- (ग) पीला खून, दो हृदय
- (घ) सफेद खून, चार हृदय

प्रश्न 5: भारत सरकार के राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन के अंतर्गत प्रधानमंत्री द्वारा हाल ही में राष्ट्र को समर्पित किए गए सुपरकंप्यूटर का नाम क्या है?

- (क) परम रुद्र
- (ख) परम गगनयान

- (ग) परम अर्क
- (घ) परम अरुणिका

प्रश्न 6: अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया गया पहला भारतीय उपग्रह कौन-सा था और किस देश से प्रक्षेपित किया गया था?

- (क) इंसेट-1ए – अमेरिका
- (ख) आर्यभट्ट – सोवियत संघ
- (ग) भास्कर-I – भारत
- (घ) रोहिणी आरएस-1 – इज़राइल

प्रश्न 7: मानव और चिंपांजी के डीएनए में कितनी समानता होती है?

- (क) 50%
- (ख) 70%
- (ग) 99%
- (घ) 100%

प्रश्न 8: मानव आँख लगभग कितने रंग पहचान सकती है?

- (क) 1,000
- (ख) 10,000
- (ग) 1 करोड़
- (घ) 1 अरब

प्रश्न 9: वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का अध्यक्ष कौन होता है?

- (क) भारत के उपराष्ट्रपति
- (ख) भारत के प्रधानमंत्री
- (ग) भारत के राष्ट्रपति
- (घ) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री

प्रश्न 10: वर्तमान में विश्व के अधिकांश रेयर अर्थ एलीमेंट (दुर्लभ मृदा तत्त्व) का उत्पादन किस देश में होता है?

- (क) अमेरिका

- (ख) चीन
- (ग) ऑस्ट्रेलिया
- (घ) ब्राज़ील

प्रश्न 11: हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा स्वीकृत 'चंद्रयान-4 मिशन' का मुख्य उद्देश्य क्या है?

- (क) चंद्रमा के नमूने पृथ्वी पर लाना
- (ख) सौर तूफानों का अध्ययन करना
- (ग) चंद्रमा पर अंतरिक्ष स्टेशन बनाना
- (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न 12: पहला अटलांटिक-पार (ट्रांसअटलांटिक) रेडियो प्रसारण किस दशक में हुआ था?

- (क) 1850 का दशक
- (ख) 1860 का दशक
- (ग) 1870 का दशक
- (घ) 1900 का दशक

प्रश्न 13 किस वैज्ञानिक ने जर्मन 'एनिग्मा कोड' तोड़े तथा एक ऐसी परीक्षा (टेस्ट) विकसित की जिसने कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नींव रखी?

- (क) एलन ट्यूरिंग
- (ख) जेफ़ बेज़ोस
- (ग) जॉर्ज बूल
- (घ) चार्ल्स बैबेज

प्रश्न 14: डीआरडीओ, 'दुर्गा-2' परियोजना के अंतर्गत किस प्रकार के हथियार का परीक्षण करने की योजना बना रहा है?

- (क) प्लाज़्मा गन
- (ख) हाइपरसोनिक मिसाइल
- (ग) लेज़र हथियार
- (घ) जैविक एजेंट

प्रश्न 15: तमिलनाडु में स्वास्थ्य जोखिमों के कारण कपास की मिठाई (कॉटन कैंडी) के उत्पादन और बिक्री पर प्रतिबंध लगाया गया। इसके उत्पादन में किस रसायन के उपयोग का पता चला?

- (क) रोडामाइन-बी
- (ख) बीटा-केसो-मॉर्फिन-7
- (ग) अल्फा हाइड्रॉक्सी एमाइन-ए
- (घ) सोडियम थायोसल्फेट-5

प्रश्न 16: आवर्त सारणी (पेरियोडिक टेबल) का सबसे नया तत्व कौन-सा है?

- (क) ओगनेसन (ओजी)
- (ख) मोस्कोवियम (एमसी)
- (ग) टेनेसिन (टीएस)
- (घ) लिवरमोरियम (एलवी)

प्रश्न 17: गीगर काउंटर क्या मापता है?

- (क) जल का तापमान
- (ख) रक्तचाप
- (ग) आयोनाइजिंग रेडिएशन
- (घ) प्रकाश की तीव्रता

प्रश्न 18: किस वैज्ञानिक ने सबसे पहले यह सिद्ध किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है?

- (क) गैलीलियो गैलीली
- (ख) जोहान्स केप्लर
- (ग) आइज़ैक न्यूटन
- (घ) निकोलस कोपरनिकस

प्रश्न 19: अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर पहुँचने वाले पहले भारतीय अंतरिक्ष यात्री कौन बने?

- (क) अनुराग प्रताप
- (ख) प्रज्ञान नायर

(ग) शुभांशु शुक्ला

(घ) अजय कृष्णन

प्रश्न 20: कवकों (फंगस) के अध्ययन को क्या कहते हैं?

(क) माइकोलॉजी

(ख) ब्रायोलॉजी

(ग) माइक्रॉलॉजी

(घ) मायोलॉजी

प्रश्न 21: हाल ही में स्पेस-एक्स ने अपने किस रॉकेट को अंतरिक्ष में भेजने के बाद सफलतापूर्वक वापस धरती पर उतारा और पुनः लॉन्च के लिए तैयार किया?

(क) स्टारशिप

(ख) फाल्कन 9

(ग) फाल्कन हेवी

(घ) ड्रैगन कैप्सूल

प्रश्न 22: भारत के पहले हाइपरलूप परीक्षण ट्रैक का नाम क्या है, जिसे हाल ही में आईआईटी मद्रास ने विकसित किया है?

(क) इंडियन हाइपरलूप परीक्षण ट्रैक

(ख) अविष्कार हाइपरलूप परीक्षण ट्रैक

(ग) सुपरस्पीड हाइपरलूप परीक्षण ट्रैक

(घ) भविष्य हाइपरलूप परीक्षण ट्रैक

प्रश्न 23: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 की थीम (विषय) क्या है?

(क) विज्ञान और नवाचार द्वारा आत्मनिर्भर भारत का निर्माण

(ख) विज्ञान और तकनीक में युवाओं की भूमिका का विस्तार

(ग) विज्ञान में भारतीय युवाओं का कौशल विकास

(घ) विकसित भारत हेतु विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना

प्रश्न 24: चैटजीपीटी का पूर्ण रूप क्या है?

(क) चैट जेनेरेटिव प्री-ट्रेंड ट्रांसफॉर्मर

(ख) चैट जनरल पर्पज ट्रांसफॉर्मर

(ग) कम्प्यूटर जेनेरेटेड प्री-ट्रेंड ट्रांसलेटर

(घ) चैट गाइडेड प्रिडिक्टिव टूल

प्रश्न 25 : हाल ही में समाचारों में उल्लेखित 'भैक्रोफेज' क्या हैं?

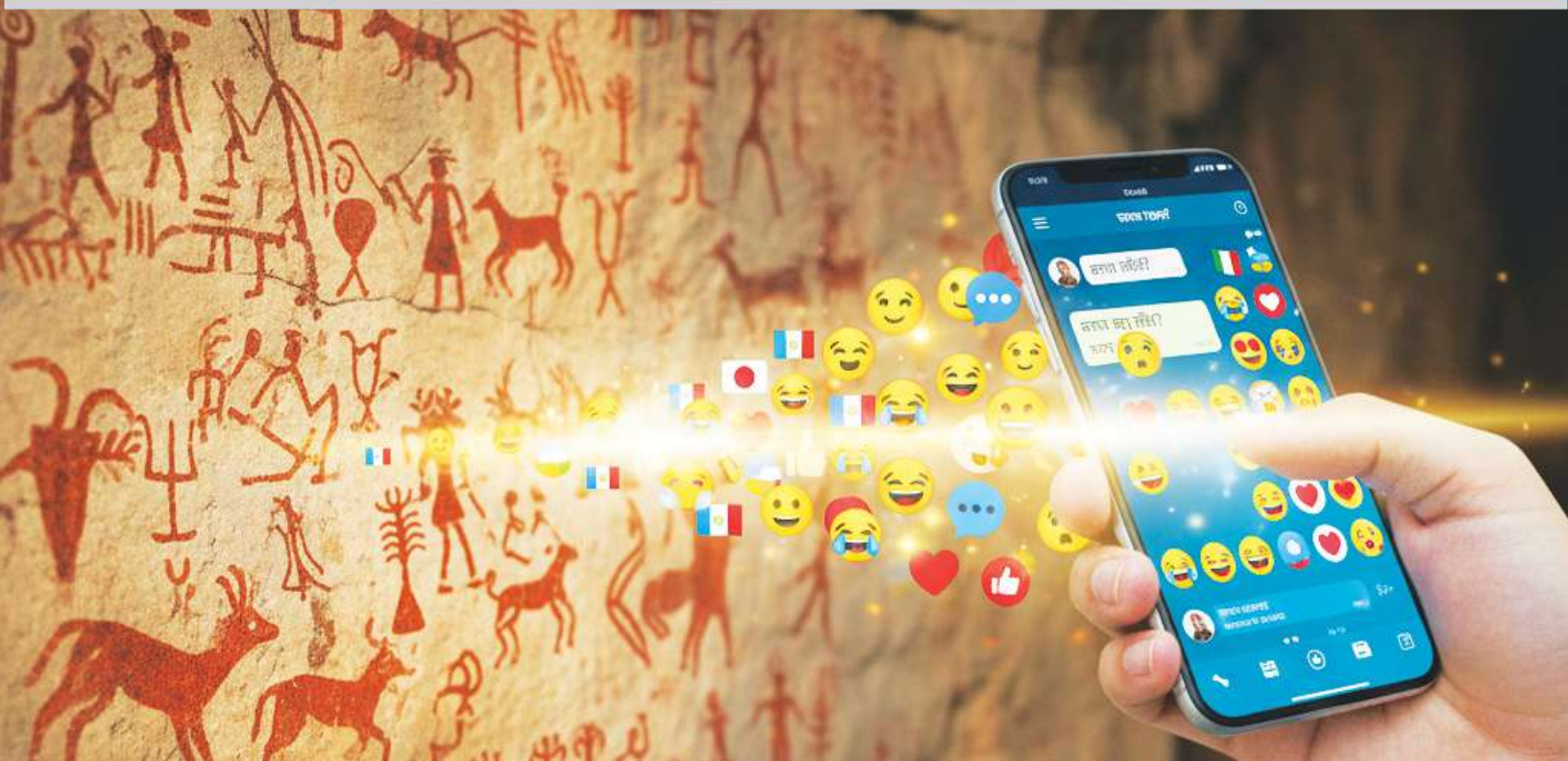
(क) श्वेत रक्त कणिकाएँ

(ख) विषाणु

(ग) क्षय रोग (टीबी) की दवाएँ

(घ) फफूंद

13.	(क)	
12.	(क)	25.
11.	(क)	24.
10.	(ख)	23.
9.	(ख)	22.
8.	(ग)	21.
7.	(ग)	20.
6.	(ख)	19.
5.	(क)	18.
4.	(ख)	17.
3.	(क)	16.
2.	(ख)	15.
1.	(ग)	14.
उत्तरमाला		



‘इमोजी’- अभिव्यक्ति का नया संसार



हेमंत कुमार यादव
हिंदी अनुवादक

तकनीक के बदलते दौर ने भाषा और लेखन शैली को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। खासकर कंप्यूटर और मोबाइल के माध्यम से होने वाले संवादों में अब भावों की अभिव्यक्ति लिखने से अधिक प्रतीकों से हो रही है, जिन्हें आजकल हम ‘इमोजी’ के नाम से जानते हैं। ‘इमोजी’ शब्द सुनते ही हमारे मस्तिष्क में चलता-फिरता, हँसता, रोता, गाता, मुस्कराता हुआ एक ऐसा चित्र उत्पन्न हो जाता है, जिसका प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में हर प्रकार की भाव अभिव्यक्ति में करते हैं।

‘इमोजी’ जापानी भाषा का शब्द है, जिसमें ‘ई’ का अर्थ चित्र और ‘मोजी’ का अर्थ चित्रलिपि वाली भाषा है। इमोजी वर्ष 1998-99 में जापानी कंपनी एनटीटी डोकोमो के कर्मचारी शिगेताका कुरिता ने बनाया था। भावनात्मक

अभिव्यक्ति के प्रतीक के रूप में विकसित ‘इमोजी’ का मतलब पहले ‘स्माइली’ था, जो कुछ-कुछ ग्राफिकल रूपरेखा जैसे लगते थे और :-) जैसे स्माइलीकॉन ने अपनी पहचान बनाई। इन्हें टाइप करने में काफी समय लगता था, इसलिए वैज्ञानिक इमोजी ने जल्द ही अपनी पकड़ बना ली।

भाषाई क्रांति के इस युग में ‘इमोजी’ मन के भावों को देखने और समझने के आसान संचार माध्यम के रूप में उभरा है। करोड़ों इंटरनेट यूजर आजकल लिखने के बजाय ‘इमोजी’ का इस्तेमाल करते हैं। भाषा का विकास किस प्रकार हुआ, यह शोध का विषय है। भाषाएं कितनी प्रकार की होती हैं, यह जानना भी रोचक है, लेकिन यह स्पष्ट है कि दुनिया भर में चित्रलिपि को सबसे आसानी से पढ़ा और समझा जाता है। चित्रलिपि का इतिहास प्राचीन काल में गुफाओं की दीवारों पर बनाए गए चित्रों से शुरू होकर आधुनिक काल में रेलवे स्टेशनों, सार्वजनिक स्थलों आदि की दीवारों पर बनाए गए संदेशों एवं दिशा सूचक चित्रों तक पहुंचा है। इसे दुनिया के किसी भी भाषा-भाषी को समझने

में देर नहीं लगती।

हमारी अभिव्यक्ति में आ रहा यह बदलाव यह दर्शाता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। पहले हम गुफाओं की दीवारों पर चित्रों द्वारा अपनी बात लिखते थे, और आज स्मार्टफोन पर वही काम कर रहे हैं। बदलते दौर के साथ विषय भी बदल रहे हैं। 'इमोजी' एक ऐसी भाषा का रूप बन गई है, जो संवाद को आसान, आकर्षक और प्रभावी बनाती है। विभिन्न देशों के झंडे, हवाई जहाज, गाड़ी, घड़ी आदि हजारों चित्रों ने संदेश भेजना सरल बना दिया है। व्हाट्सएप, फेसबुक और एक्स (पहले ट्विटर) जैसे प्लेटफॉर्म पर इसका बड़े पैमाने पर उपयोग हो रहा है।

एक अनुमान के मुताबिक सोशल मीडिया पर बातचीत या ऑनलाइन चैटिंग के दौरान लगभग 80% लोग 'इमोजी' का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके तीन मुख्य कारण हैं –

1. टाइपिंग की आवश्यकता नहीं होती।
2. संवाद को रोचक और प्रभावी बनाया जा सकता है।
3. 'इमोजी' न केवल शब्दों का विकल्प है, बल्कि आपके भीतर के भावों को भी स्पष्ट कर देती है।

आज 'इमोजी' इंटरनेट की दुनिया में केवल प्रतीक चित्र नहीं रह गए हैं। ये हमारे जीवन में इस प्रकार घुल-मिल गए हैं कि बातचीत और भावनात्मक व्यवहार में भी अपनी जगह बना ली है। यह किसी भी भाषा के विकल्प के तौर पर नहीं, बल्कि एक नई भाषा के रूप में उभरा है।

मनुष्य हमेशा से संकेतों के माध्यम से कम शब्दों में अधिक कहने की कोशिश करता रहा है। चाहे वह हैंड साइन

हो, कार्टून क्रियाएं हों या संकेत चित्र। 'इमोजी' इसी कला का आधुनिक रूप है। इसे इंटरनेट पर मानव जीवन को सरल बनाने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। 'इमोजी' का निर्माण पिक्टोग्राफी क्रिएशन (चित्रलेखन निर्माण) के अंतर्गत किया गया है, ताकि इसे किसी विशेष तकनीकी उपकरण या भाषा तक सीमित न रखा जाए।

कुल मिलाकर अंततः यह कहना न होगा कि 21वीं सदी के इस दौर में हमारी भाषा और लिपि दोनों के संस्कारों में बड़ी तेजी से बदलाव हो रहे हैं। अब दुनिया भर के लोग

अपनी निजी भावनाओं, संवेदनाओं, जज़्बातों एवं मनोभावों को व्यक्त करने के लिए लंबे-चौड़े वाक्य लिखने के बदले 'इमोजी' का इस्तेमाल कर रहे हैं। दुनिया में दिल की भावनाएँ पीछे रह गई हैं और डिजिटल रूपी हँसते-मुस्कुराते इमोजियों ने उसकी जगह ले ली है। अब असली आंसुओं की जगह नीले रंग के डिजिटल आंसुओं ने ली है। अब चेहरे की खुशी की बजाय लोग हँसता हुआ इमोजी भेजने लगे हैं। आलम यह है कि अब लोग एक दूसरे की भावनाएँ, चेहरे देखकर नहीं बल्कि इमोजी देखकर समझते हैं। अतः, निकट भविष्य में ये इमोजी यदि सार्वभौमिक भाषा के रूप में अपनी पहचान बना ले तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। इसके

विकास के कारण दुनिया की अन्य भाषाओं की विलुप्ति को लेकर आगतसाध्वस (भयभीत) होने की जरूरत नहीं है क्योंकि भाषाएं अपने लोगों और अपने समाज से पुष्पित एवं पल्लवित होती हैं न कि किसी कृतिम साधन से। फलतः, जब तक हम अपनी भाषा में बोलते एवं लिखते रहेंगे तब तक उसे कोई खतरा नहीं है।





उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षण संस्थानों में हिंदी की स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ



आशीष नंदगावली
कनिष्ठ अभियंता

आज के तकनीकी युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। हर दिन नए शोध, नवाचार और तकनीकी विकास हमारे समाज, शिक्षा, स्वास्थ्य और संचार के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं। तकनीक और विज्ञान की यह यात्रा केवल शहरी विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों को भी अपनी प्रभावशाली पहुंच में ले रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग, ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस, बायोटेक्नोलॉजी, 5जी और 6जी तकनीक, और डिजिटल सेवाओं के माध्यम से हम भविष्य के एक ऐसे समाज की ओर अग्रसर हैं जहाँ जीवन पहले से कहीं अधिक स्मार्ट, सुरक्षित और सुविधाजनक होगा।

लेकिन इस बदलते तकनीकी परिवेश में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी है कि क्या भारतीय भाषाएँ, विशेष रूप से हिंदी, इस प्रगति का समानांतर भाग बन पा रही हैं? क्या तकनीकी शिक्षा और उच्च शिक्षा संस्थानों में हिंदी को वह स्थान मिल रहा है, जिसकी वह अधिकारी है? इस आलेख का उद्देश्य न केवल विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हो रहे नवीनतम परिवर्तनों को समझना है, बल्कि उच्च शिक्षा और तकनीकी संस्थानों में हिंदी की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ, शोध की

संभावनाएँ और उनके समाधान पर भी विचार प्रस्तुत करना है।

तकनीकी शिक्षा में हिंदी की स्थिति पर विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि देश के अधिकांश तकनीकी संस्थानों—जैसे आईआईटी, एनआईटी, और केंद्रीय विश्वविद्यालयों में माध्यम अंग्रेजी है। तकनीकी शब्दावली, संदर्भ पुस्तकें, शोध पत्र और प्रायोगिक कार्य सभी अंग्रेजी में होते हैं। यह स्थिति हिंदी भाषी छात्रों के लिए एक बड़ी बाधा बनती है, खासकर तब जब वे ग्रामीण या साधनहीन पृष्ठभूमि से आते हैं। वे तकनीकी अवधारणाओं को समझने और अभिव्यक्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं, जिससे उनकी प्रतिभा और नवाचार क्षमता प्रभावित होती है।

हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारत सरकार ने तकनीकी शिक्षा में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में पहल की है। कुछ तकनीकी संस्थानों ने हिंदी माध्यम से इंजीनियरिंग पाठ्यक्रमों को आरंभ किया है, और तकनीकी शब्दावली को हिंदी में अनुवाद करने के लिए आयोग भी गठित किए गए हैं। लेकिन यह पहल अभी भी सीमित दायरे में है और व्यापक रूप से लागू नहीं हो पाई है।



तकनीकी संस्थानों में हिंदी में शोध कार्यों की स्थिति पर दृष्टि डालें तो यह और भी अधिक चिंताजनक है। अधिकांश शोधपत्र अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं, और हिंदी में शोध को अकादमिक गुणवत्ता के मामले में गंभीरता से नहीं लिया जाता। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह है-उपयुक्त संसाधनों और उच्च गुणवत्ता वाली हिंदी शोध सामग्री की कमी। तकनीकी विषयों की जटिल शब्दावली और उनकी सीमित हिंदी अभिव्यक्ति भी इस दिशा में एक चुनौती है। इसके अतिरिक्त, हिंदी में शोध करने वाले छात्रों को मार्गदर्शन और लेखन सहायता भी कम मिलती है, जिससे उनका शोध अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाता।

इन समस्याओं के बावजूद हिंदी में तकनीकी शोध की संभावनाएं बहुत अधिक हैं। हिंदी भाषी राज्यों में लाखों छात्र तकनीकी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, जिनमें अनेक छात्रों में शोध की अद्भुत क्षमता है। यदि उन्हें अपनी भाषा में शोध करने का अवसर, संसाधन और मार्गदर्शन मिले, तो वे तकनीकी क्षेत्रों में नवीन दृष्टिकोण और समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। तकनीकी संस्थानों में एक बहुभाषी शोध वातावरण का निर्माण किया जा सकता है, जहाँ हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी शोध को प्रोत्साहित किया जाए।

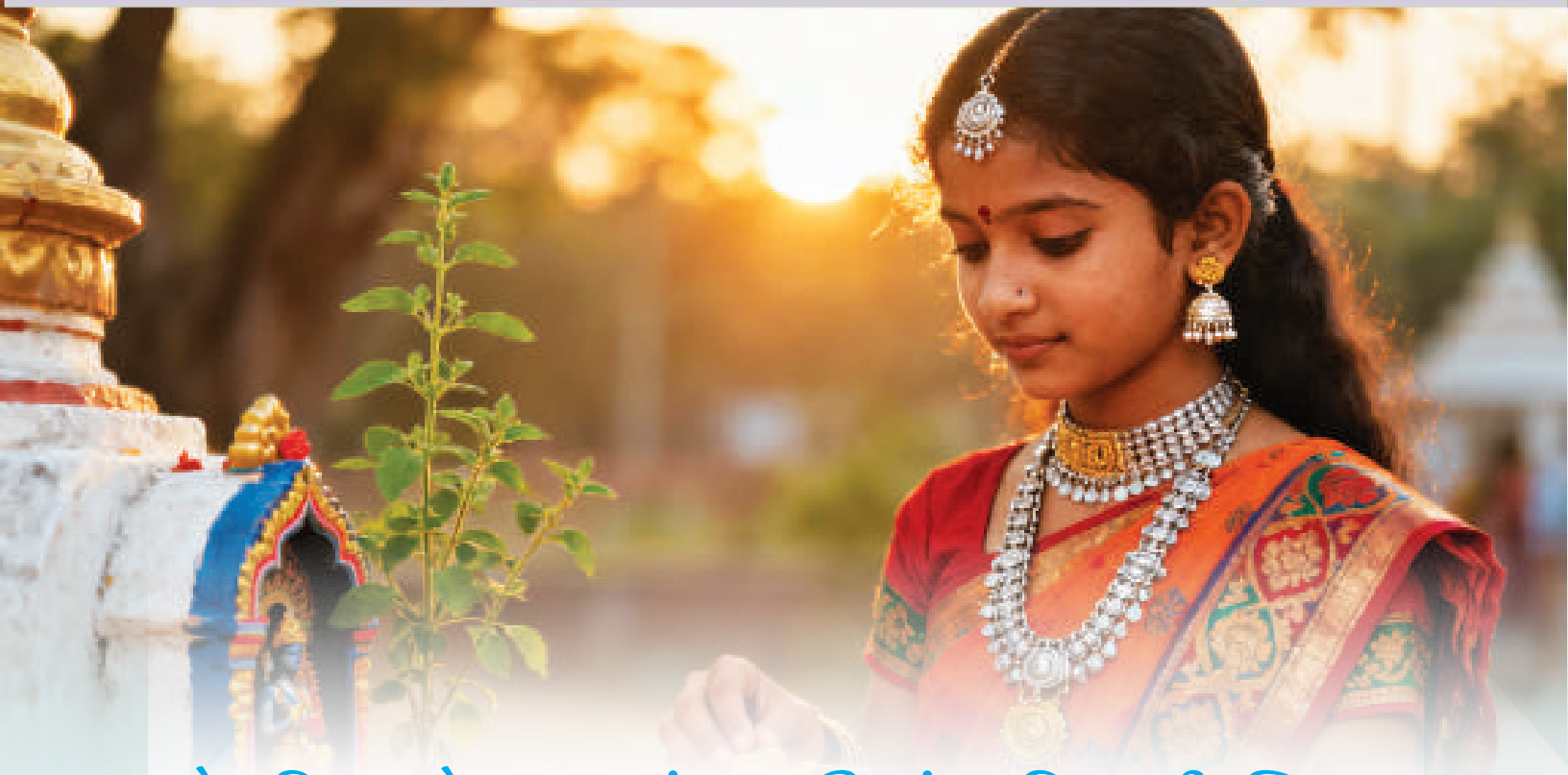
इस दिशा में कई समाधान प्रस्तावित किए जा सकते हैं। पहला, उच्च शिक्षा और तकनीकी संस्थानों में द्विभाषी शिक्षा प्रणाली को लागू करना, जिसमें अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी पाठ्य सामग्री उपलब्ध हो। दूसरा, तकनीकी शब्दों की एक मानकीकृत और सरल हिंदी शब्दावली तैयार

कर उसका डिजिटल रूप में प्रचार-प्रसार करना। तीसरा, हिंदी में तकनीकी पुस्तकों, जर्नलों और शोध पत्रिकाओं की संख्या बढ़ाना ताकि छात्रों और शोधार्थियों को गुणवत्तापूर्ण संदर्भ सामग्री प्राप्त हो सके। चौथा, तकनीकी शोधपत्र लेखन के लिए हिंदी लेखन कार्यशालाओं का आयोजन करना, जिससे छात्रों को हिंदी में वैज्ञानिक लेखन की शैली का प्रशिक्षण मिल सके।

इस दिशा में 'तकनीकी शब्दावली आयोग' और 'केंद्रीय हिंदी निदेशालय' जैसे संस्थानों को भी अपनी भूमिका अधिक सक्रिय रूप से निभानी होगी। साथ ही, तकनीकी विश्वविद्यालयों में हिंदी प्रकोष्ठों को केवल अनुवाद तक सीमित न रखकर शोध, प्रकाशन और तकनीकी लेखन के प्रोत्साहन में भागीदार बनाना होगा।

भविष्य में, जब विज्ञान और तकनीक और भी तेजी से आगे बढ़ेंगे, तब यह आवश्यक होगा कि भारत की भाषाई विविधता भी इस प्रगति में सहभागी बने। तकनीक केवल भाषा विशेष की संपत्ति न होकर हर वर्ग और क्षेत्र के लोगों की साझी विरासत बने, तभी हम एक समावेशी और सशक्त भारत का निर्माण कर सकेंगे। हिंदी में तकनीकी शोध और शिक्षा को बढ़ावा देना इस दिशा में एक निर्णायक कदम हो सकता है।

अंततः कहना न होगा कि विज्ञान और तकनीकी प्रगति ने निश्चित ही हमारे जीवन को अनेक क्षेत्रों में उन्नत और सक्षम बनाया है। लेकिन यदि हम इन प्रगतियों को केवल अंग्रेजी तक सीमित रखेंगे, तो समाज का एक बड़ा वर्ग इस विकास से वंचित रह जाएगा। तकनीकी शिक्षा में हिंदी को उचित स्थान देना, शोध की संभावनाओं को विस्तृत करना, और उससे जुड़ी चुनौतियों को दूर करना हमारी शैक्षिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी है। आने वाले समय में यदि यह प्रयास सशक्त रूप से किए जाएँ, तो विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी एक समर्थ भाषा बन सकती है-जो न केवल ज्ञान का माध्यम बनेगी, बल्कि नवाचार और शोध की सशक्त वाहक भी होगी।



नेत पिला: सेवायत परंपरा की सांस्कृतिक दीपशिखा



निबेदिता पट्टनायक
सहायक कुलसचिव (छात्र कार्य)

श्रीक्षेत्र पुरी—जहाँ धर्म, संस्कृति और परंपरा की सुगंध सदा महकती रहती है—उत्कल की सांस्कृतिक चेतना का एक जीवंत प्रतीक है। यहाँ वर्ष भर में बारह मासों में तेरह पर्व, अनगिनत व्रत, यात्रा, मेला और मौच्छव श्रीजगन्नाथ की उपासना को उत्सवमय

बनाए रखते हैं। चंदन यात्रा, साही यात्रा, स्नान पूर्णिमा, रथ यात्रा, हरि शयन एकादशी जैसे पर्व पुरी की लोकसंस्कृति के अभिन्न अंग हैं।

इसी सांस्कृतिक परंपरा में सेवायत समाज की भूमिका अत्यंत विशिष्ट है। सेवायतों की परंपरा न केवल धार्मिक अनुष्ठानों की वाहक है, बल्कि वह एक सांस्कृतिक उत्तराधिकार भी है, जो उन्हें सामान्य जनजीवन से अलग एक विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

नेत पिला परंपरा: बालिकाओं की भक्ति और सौंदर्य का संगम:

सेवायत परिवारों- जो महाप्रभु जगन्नाथ के आद्य सेवक होते हैं, उनके परिवारों में आश्विन शुक्ल पंचमी से अष्टमी तक एक अनोखी परंपरा निभाई जाती है, जिसे नेत पिला परंपरा कहा जाता है। यह एक प्राचीन परंपरा है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है, जिसमें सेवायत परिवार की छोटी कन्याएं हर-पार्वती की यह उपासना करती हैं।

हालाँकि यह उत्सव विधिवत रूप से आश्विन शुक्ल पंचमी से मनाया जाता है, इसकी पूजा विधि भाद्र पूर्णिमा (इंदु पूर्णिमा) से प्रारंभ होती है और आश्विन शुक्ल अष्टमी तक चलती है। किंवदंती के अनुसार, माता पार्वती ने प्रभु सदाशिव को तपस्या और पूजा द्वारा प्रसन्न किया था। उसी श्रद्धा से सेवायत परिवार की कन्याएं हर-पार्वती को संतुष्ट करने हेतु 21 दिनों तक तुलसी चौरा के पास संध्या समय हरगौरी व्रत या बली ओषा करती हैं।

एक छोटे डिब्बे में गुड़, सात टुकड़े हल्दी को व्रत के

पवित्र धागे से बाँधकर तुलसी चौरा के पास मुरुज (सफेद खड़िया पत्थर चूर्ण) से मंडल बनाकर रखा जाता है। दीप जलाकर बली गीत गाते हुए कन्याएं मंडल की परिक्रमा करती हैं। इसे शिव के प्रतीक रूप में पूजा जाता है। विश्वास है कि इस व्रत से कन्याएं भविष्य में अच्छा घर, अच्छा वर और परिवार की आशीर्वाद कामना करती हैं।

पारंपरिक वेशभूषा और आभूषणों की गरिमा:

आश्विन शुक्ल पंचमी को नेत पंचमी कहा जाता है। सेवायत परिवार की कन्याओं को उनके ननिहाल से नया पाट वस्त्र, चाँदी का फरुआ और कुछ गहने आते हैं। नेत पिला परंपरा का सौंदर्य इसकी वेशभूषा में भी झलकता है। बालिकाएं पारंपरिक पाट साड़ी (खानदानी ओडिशी या खंडुआ पाट/शिल्क) पहनती हैं। माथे पर चंदन-कुंकुम, आँखों में काजल, पैरों में अलता लगाकर वे पाट वस्त्र को कमर में कसकर पहनती हैं और विविध सोने-चाँदी के पारंपरिक आभूषणों से सुसज्जित होती हैं। श्रृंगार में निम्नलिखित प्राचीन अलंकरण शामिल होते हैं:

- **सिर पर:** अलका, केतकीरेखा, पानपत्र, रागिड़ी, पूर्णचंद्र (चंद्रमा के आकार का टीका), और बेणी के लिए सोने की काकरा, चाँदी की फुली आदि।
- **कानों में:** कानफूल, पेण्डी, मलकढ़ी, फासिया, बाउली, फिरफिरा आदि।
- **नाक में:** नथ, गुना, दंडी।
- **गले में:** चापसरी, सोरिसिया माली, धानुआ माली, गिनी माली, डंगी माली, कुरुजातक, चांपूआणी, मउड़ माली आदि।
- **बाहों में:** बाजूबंद, डेउरिया, बला, काठी, रसुनिया आदि।
- **कटि में:** चंद्रहार, पाउंजि बिछा, अंटामाल।
- **हाथों में:** कंठी, पोहला, बटफल, मटर खड्ड, चाई झुड़िकी।
- **पैरों में:** पाजेब(पायल) गोड़ खड्ड (चाँदी से बना मोटा कड़ा), पाहुड़, बांकी, मगर मुंडिया, गोड़ मुदी, पादपद्म,

पाउंजि आदि।

इन पारंपरिक आभूषणों से सजी बालिकाएं एक ओड़ियाणी बहू की तरह दिखती हैं—जिसमें ओड़िशा की सांस्कृतिक विरासत, सौंदर्य और गरिमा की झलक मिलती है। ये गहने और वस्त्र पीढ़ी दर पीढ़ी परिवारों में हस्तांतरित होते हैं। बालिकाएं फल, परिबा और गुड़ अर्पित कर पूजा करती हैं; जो एक मानसिक पूजा मानी जाती है। आमतौर पर कान छिदवाने के बाद 3, 5, 7 या 9 वर्ष की उम्र तक यह व्रत किया जाता है।

मार्कंडेय पुष्करिणी में पूजा और समर्पण:

श्रीक्षेत्र पुरी में तीर्थयात्री पंचतीर्थ दर्शन करते हैं, जिनमें मार्कंडेय पुष्करिणी एक प्रमुख स्थल है। यह श्रीमंदिर के उत्तर-पश्चिम में स्थित है, जहाँ मार्कंडेयेश्वर महादेव और माँ वृंदावती और सप्तमातृका के मंदिर हैं। मादलापांजी के अनुसार, इसका निर्माण राजा कोशल केशरी और भीम केशरी द्वारा कराया गया था।

दशहरा या आश्विन शुक्ल पंचमी से लगातार चार दिन तक ये बालिकाएं नेत वेश में सजकर अपनी नानी, दादी या अन्य बुजुर्ग महिलाओं के साथ मार्कंडेय पुष्करिणी जाती हैं। बालिकाएं एक हाथ में चाँदी के कराट में सात कौड़ी भरकर रखती हैं और दूसरे हाथ में संकल्प सामग्री—गुड़, हल्दी, नारियल, पानपत्र, व्रत पवित्र धागा, धूप, दीप, फूल और दक्षिणा के साथ पाँच प्रकार के फल और परिबा आदि लेकर वृंदावती को अर्पित करती हैं। वहाँ बालू में शिवलिंग बनाकर हरगौरी की पूजा करती हैं और मार्कंडेयेश्वर महादेव के दर्शन करती हैं। व्रत, गुड़ और पवित्र धागा पुरोहित को अर्पित कर दक्षिणा देती हैं। जिसे धुडुकी पूजा भी कहा जाता है।

इसके साथ माँ वृंदावती के पास पूजा कर धूप, दीप, और नैवेद्य अर्पित कर सुंदर बली गीत गाया जाता है:

“बलीरे बली, न कर कली,
कालि आणिदेवी सरु चकुली,
सरु चकुलीर उपरे महु,
धूप खटिगले राजांक बोहू...।”

यह गीत न केवल एक पूजा विधि का वर्णन करता है, बल्कि उसमें स्त्री की भूमिका, उसकी भक्तिपूर्ण श्रद्धा, और पारंपरिक सौंदर्यबोध की वेशभूषा को भी दर्शाता है। राजांक बोहू कहना अर्थ एक आदर्श गरिमामयी, और सुसंस्कृत राज घराने की स्त्री, जो व्रत पूजन करने के लिए सारे विधियाँ निष्ठा के साथ पालन करती है।

इस पूजा के बाद संकल्प नारियल और हल्दी को घर लाया जाता है। कुमार पूर्णिमा के दिन हल्दी को पीसकर स्नान कर नए वस्त्र पहनकर दिन में सूर्य पूजा और शाम को चंद्र पूजा की जाती है। पूजा के बाद नारियल को तोड़कर उसका रस पीकर कन्याएं व्रत का समापन करते हैं।

भक्ति, परंपरा और सांस्कृतिक शिक्षा का संगम:

नेत पिलाएं इस वेश में अपने संबंधियों और मित्रों के घर जाती हैं और माथा झुकाकर आशीर्वाद मांगती हैं। मुख्यतः माता-पिता की आयु वृद्धि, परिवार की मंगलकामना और भविष्य में अच्छे वर की प्राप्ति हेतु यह व्रत श्रद्धा और नियमपूर्वक किया जाता है। इन दिनों वे मांसाहार से परहेज करते हैं। यह परंपरा न केवल धार्मिक है, बल्कि यह बालिकाओं को सेवायत घर की परंपरा, रीति-नीति और सांस्कृतिक उत्तराधिकार की शिक्षा देती है। बचपन से ही उन्हें पारंपरिक गहनों को पहनने की आदत डाली जाती है ताकि वे अपने पूर्वजों की परंपरा को आगे बढ़ा सकें। प्राचीन गहनों में सजी कन्याएं जब नेत वेश में होती हैं, तो एक समृद्ध ओड़ियाणी वेश की झलक मिलती है—जो आज के समय में दुर्लभ है।

विवाह के बाद यही वेश गुआली वेश के रूप में फिर से धारण किया जाता है, जब वे अपने पति के साथ रिश्तेदारों के घर जाती हैं।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर:

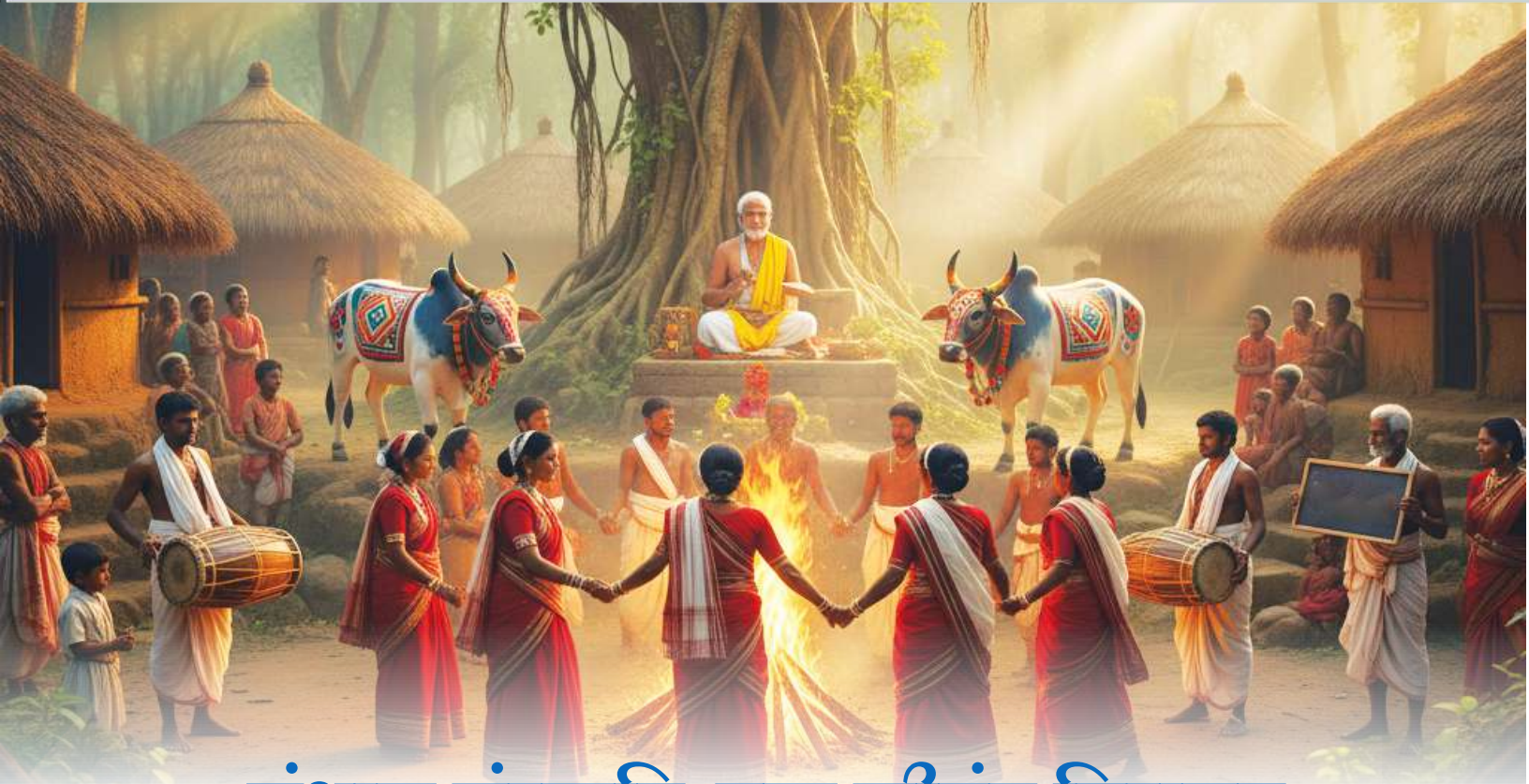
इस परंपरा का कोई निश्चित इतिहास नहीं है, लेकिन यह सदियों से चली आ रही है। दुर्भाग्यवश, पहले यह परंपरा सेवायत घरों में व्यापक रूप से प्रचलित थी, लेकिन आज यह कुछ ही परिवारों तक सीमित रह गई है। शहरी सभ्यता का प्रभाव हमारी लोकसंस्कृति और कला पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

जगन्नाथ उपासना से जन्मी जगन्नाथ संस्कृति उत्कल समाज का अस्तित्व है। वे हमारे लोकदेवता हैं। लेकिन जगन्नाथ उपासना में समर्पित सेवायत घरों की कन्याएं इंदु पूर्णिमा से नेत पंचमी तक शैव आराधना में लीन रहती हैं। यह हरिहर भक्ति का एक अनोखा संगम अर्थात् वैष्णव और शैव भक्ति मिलन का एक सशक्त उदहारण है।

अंततः कहा जा सकता है कि जब किसी जाति की जीवनशैली, चिंतन, दर्शन, सभ्यता और सौंदर्यबोध परिपक्व होते हैं, तब एक उन्नत संस्कृति का उदय होता है। ऐसी संस्कृति में लोकाचार, भाषा, साहित्य, कला, संगीत और नृत्य जैसे तत्व गहराई से समाहित होते हैं। जब धर्म और संस्कृति के बीच समन्वय स्थापित होता है, तब वह समाज न केवल आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होता है, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी विकसित होता है।

ओडिशा की अनेक परंपरा और प्रथाओं में श्रीक्षेत्र पुरी के नेत पिला परंपरा एक ऐसी ही बिरल परंपरा है, जो भक्ति, समर्पण और सांस्कृतिक समृद्धि की एक जीवंत झलक है।





संथाल संस्कृति: एक जीवंत विरासत



मार्शल टुडू
कनिष्ठ अधीक्षक

संथाल जनजाति भारत की सबसे बड़ी और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध आदिवासी समुदायों में से एक है, जिसका जीवन प्रकृति, परंपरा और सामुदायिक एकता से गहराई से जुड़ा है। संथाल समुदाय का हिस्सा होना गर्व और जिम्मेदारी दोनों का प्रतीक है, क्योंकि यह जीवन की एक ऐसी शैली को दर्शाता है जो धरती, जंगल और जीव-जंतुओं के साथ संतुलन में है। संथालों ने आधुनिकता की आंधियों के बावजूद अपनी भाषा, संस्कृति और पहचान को जीवित रखा है, जो उनकी असाधारण दृढ़ता और सांस्कृतिक आत्मबल को दर्शाता है।

संथाल समुदाय मुख्यतः ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल, बिहार और असम के ग्रामीण एवं वन क्षेत्रों में निवास

करता है। इनका जीवन छोटे गांवों में संगठित होता है जो आपसी सहयोग और साझेदारी की भावना पर आधारित होता है। संथाली भाषा, जो इनकी सांस्कृतिक धरोहर की आत्मा है, लोकगीतों, लोककथाओं और मौखिक परंपराओं से समृद्ध है। संथाली भाषा की अपनी लिपि 'ओल चिकी' है, जिसे 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू ने विशेष रूप से संथाली भाषा को संरक्षित करने के लिए तैयार किया था। यह लिपि स्वतंत्र, ध्वन्यात्मक रूप से सटीक, और ब्राह्मी से भिन्न है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली भाषा को 2003 में शामिल किया गया, जिससे यह भाषा शिक्षा और प्रशासन में अधिक अधिकारपूर्वक स्थान प्राप्त कर सकी।

संथालों का जीवनचक्र प्रकृति के साथ एक गहरे संबंध में बंधा हुआ है। इनके पर्व-त्योहार जैसे सोहराय, साकरात और बहा न केवल कृषि चक्र का उत्सव होते हैं, बल्कि प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान का भी प्रतीक होते हैं। सोहराय त्योहार में पशुओं को स्नान कराकर सजाया

जाता है और उनका पूजन कर विशेष भोज दिया जाता है। बहा त्योहार वसंत के स्वागत और फूलों की सुंदरता को समर्पित होता है, जिसमें नायक यानी गाँव का पुजारी पवित्र जंगल 'जाहेर थान' में पूजा करता है। साकरात या मकर संक्रांति के समय सामूहिक भोज, लोकगीत और अलाव के साथ पूरे गाँव में उत्सव मनाया जाता है।

संथालों के जीवन की हर घटना : जन्म से लेकर मृत्यु तक – एक सामाजिक और आध्यात्मिक अनुष्ठान से जुड़ी होती है। जन्म के दिन शुद्धिकरण होता है, और 21वें दिन नामकरण संस्कार 'छातियार' मनाया जाता है। मृत्यु के समय आत्मा को सम्मानपूर्वक विदा देने के लिए शव को विशेष रीति से दफनाया जाता है और 'भंडान' तथा 'नेघाथ' जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से परिजन आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हैं। ये सारे अनुष्ठान न केवल धार्मिक होते हैं, बल्कि समुदाय के भीतर एकजुटता और सहानुभूति की भावना को भी प्रबल करते हैं।

संथाल समाज की विशेषता इसके विवाह संस्कार में भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। बपला यानी विवाह समारोह प्रेम, सहभागिता और परंपरा का उत्सव होता है। विवाह के पहले बहा नेपेल (प्रस्तावना) और सर सगुन (सगाई) जैसे चरण होते हैं। विवाह पवित्र वन या जाहेर थान में होता है, जहाँ बलि, पूजा, संगीत और नृत्य के साथ विवाह संपन्न होता है। इस प्रक्रिया में ब्राह्मण पुजारी की कोई भूमिका नहीं होती, बल्कि गाँव का प्रमुख (माझी) और पुजारी (नायक) सभी धार्मिक गतिविधियों का संचालन करते हैं। प्रेम विवाह सामाजिक रूप से स्वीकृत है और कन्या मूल्य केवल प्रतीकात्मक सम्मान के रूप में लिया जाता है। विवाह उत्सव में पूरे गाँव की भागीदारी होती है जिससे यह व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक उत्सव बन जाता है।

संथालों के धार्मिक विश्वास प्रकृति, आत्माओं और पूर्वजों के प्रति सम्मान से जुड़े होते हैं। इनका मुख्य देवता मरांग बुरु पर्वतों और वनों के रक्षक माने जाते हैं। ठाकुर जिउ सूर्य और कृषि के देवता हैं, जबकि बोंगा आत्माएँ होती हैं – कुछ शुभ, कुछ अशुभ। पूर्वजों की आत्माओं को भी

विशेष स्थान प्राप्त है, और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु नियमित पूजा की जाती है। सभी धार्मिक क्रियाएँ नायक के मार्गदर्शन में की जाती हैं, जो समुदाय का आध्यात्मिक मार्गदर्शक होता है।

संथाल समुदाय की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक एकता है, लेकिन वर्तमान में यह सांस्कृतिक अस्तित्व कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। औद्योगिकीकरण, खनन, बाँध और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे विकास परियोजनाओं के चलते वनवासियों को उनके पारंपरिक निवास स्थानों से विस्थापित किया जा रहा है। इससे न केवल उनकी आजीविका खतरे में है, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता भी प्रभावित हो रही है। ऐसे में सरकार और समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विकास समावेशी हो और उसमें आदिवासी समुदायों के अधिकारों, परंपराओं और जीवनशैली का सम्मान बना रहे।

संथाल होना मात्र एक पहचान नहीं, यह एक जीवनदृष्टि है – जो पृथ्वी, जंगल और मानव समुदाय के बीच संतुलन को महत्व देती है। हम अपने पूर्वजों का सम्मान करते हैं, अपनी भूमि की रक्षा करते हैं और जीवन को उत्सव की तरह जीते हैं। हमें गर्व है कि हम संथाल हैं – एक ऐसी संस्कृति के वाहक जो दृढ़ता, आत्मसम्मान और प्रकृति के सामंजस्य से परिपूर्ण है।





राजा मुंज और भोज की प्रेरक लोककथा

बहुत समय पहले की बात है। भारतवर्ष के मालवा प्रदेश में एक प्रतापी राजा राज्य करते थे – राजा सिंधुराज। वे परमार वंश के गौरव थे और प्रजापालक राजा के रूप में प्रसिद्ध थे। राजा के एक पुत्र था – भोज। बालक भोज जन्म से ही बुद्धिमान, विनम्र और व्यवहार कुशल था। लेकिन दुर्भाग्यवश, जब भोज केवल पाँच वर्ष का था, तभी उसके पिता का देहांत हो गया।

मरणासन्न अवस्था में राजा ने अपने छोटे भाई मुंज को बुलाकर कहा –

“भ्राता, जब तक मेरा पुत्र भोज योग्य और सक्षम न हो जाए, तब तक आप राज्य का संचालन करें। परंतु जब वह योग्य हो जाए, तो कृपया उसे उसका अधिकार लौटा देना।”

राजा की मृत्यु के बाद मुंज ने राज्यभार अपने हाथ में ले लिया। प्रारंभ में तो उन्होंने ईमानदारी से राजकाज संभाला, लेकिन समय बीतने के साथ उनके मन में लोभ

और सत्ता की लालसा घर करने लगी। उन्हें लगा कि यदि भोज जीवित रहा, तो एक दिन उन्हें गद्दी छोड़नी पड़ेगी। यह विचार उनके लिए असहनीय था।

एक दिन राजा मुंज ने गुप्त रूप से अपने दो विश्वासपात्र सिपाहियों को बुलाया और आदेश दिया –

“भोज को किसी बहाने से जंगल ले जाओ... और उसे वहीं समाप्त कर दो। किसी को कानों-कान खबर नहीं होनी चाहिए।”

सिपाही राजा के आदेश से विचलित तो हुए, पर डर के मारे उन्होंने कोई विरोध न किया। अगली सुबह वे बालक भोज को शिकार देखने के बहाने जंगल ले गए।

जैसे ही वे गहरे जंगल में पहुँचे, सिपाहियों ने भोज से कहा, महाराज हमें राजा ने आपको मारने का निर्देश दिया है। भोज मुस्कुराए और कहा राजा के आदेश का पालन करो। सिपाहियों ने भावुक होकर महाराज आपके पिता ने

हमारे ऊपर कई उपकार किए हैं हम कैसे उनके द्वारा दी गयी इस तलवार से आपको मार सकते हैं हम ऐसा नहीं कर सकते। भोज ने कहा ऐसा नहीं करने पर तुम मारे जाओगे। आगे बढ़ो राजा के आदेश का पालन करो। तब एक सिपाही ने कहा महाराज आप तो संत आदमी हैं “एक उपाय है। आप सन्यास ले लें। जंगल में रहे, शिक्षा प्राप्त करें। हम किसी जानवर को मारकर उसके खून से सनी तलवार राजा को दिखा देंगे और राजा से कह देंगे कि हमने आपको मार डाला। इससे हमारा और आपका दोनों का जीवन बच जाएगा।”

बालक भोज, जो अपनी आयु से कहीं अधिक बुद्धिमान था, एक पल को शांत रहे और उन्होंने अपने वस्त्र का एक टुकड़ा फाड़ा और रक्त से एक श्लोक लिखा। यह श्लोक आज भी “मांधाता संदेश” के नाम से प्रसिद्ध है:

**मांधाता स महिपतिः कृत युगालंकार भूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः वासौदशास्यांतकः
अन्येचापि युधिष्ठिर प्रभुतयो याता दिवं भूपते
नैकेनापि सम गता वसुमती मान्ये त्वया यास्यति।**

अर्थ:

“हे राजन, सतयुग को सुशोभित करने वाले मांधाता चले गए, जिन्होंने समुद्र पर सेतु बनाया – ऐसे राम भी नहीं रहे। द्वापर में युधिष्ठिर और अन्य बड़े राजाओं ने भी संसार छोड़ दिया। पृथ्वी किसी के साथ नहीं गई, पर शायद अब कलियुग में यह आपके साथ अवश्य जाएगी!”



जब राजा मुंज ने वह श्लोक पढ़ा, तो जैसे उसकी आत्मा को किसी ने झकझोर दिया। उसका सिर शर्म से झुक गया। उसने सोचा –

“मैं भी राजा हूँ, क्या मैं मांधाता, राम, युधिष्ठिर से बड़ा हूँ? जब वे सब इस पृथ्वी को छोड़ कर चले गए, तो मैं किस भ्रम में जी रहा हूँ?”

राजा मुंज की आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे। उसी समय सिपाहियों ने राजा को पूरी घटना बताई और

बालक भोज को लेकर वहाँ आए। मुंज ने जैसे ही भोज को जीवित देखा, वह दौड़कर उसके पास आया और उसे अपनी छाती से लगा लिया।

राजा मुंज ने बालक भोज से क्षमा मांगी और तुरंत सभा बुलाकर उसे राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। स्वयं

उसने राज-पाट छोड़ दिया और शेष जीवन साधना एवं भक्ति में व्यतीत किया।

बालक भोज, जो अब राजा भोज कहलाए, बड़े होकर एक महान सम्राट बने। उन्होंने साहित्य, न्याय, कला, विज्ञान और संस्कृति को अभूतपूर्व ऊँचाई पर पहुँचाया। उनके नाम पर ही भोजपाल नगर बसा, जिसे आज हम भोपाल के नाम से जानते हैं।

कथा का मर्म : लोभ चाहे कितना भी प्रबल हो, सत्य और विवेक के आगे झुक ही जाता है। एक बालक भी अपनी बुद्धि और नीति से क्रूरता को ममता में बदल सकता है।

स्रोत:- इंटरनेट



गीतांश करन

कनिष्ठ अधीक्षक (स्थापना अनुभाग)

मेरी कश्मीर यात्रा : धरती के स्वर्ग का एक यादगार सफ़र

कश्मीर का नाम लेते ही आँखों के सामने बर्फ से ढके ऊँचे-ऊँचे पर्वत, हरे-भरे देवदार के जंगल, कल-कल बहती नदियाँ और झीलों की लहरों में तैरते

रंग-बिरंगे शिकारे तैरने लगते हैं। कश्मीर को यँ ही सदियों से “धरती का स्वर्ग” नहीं कहा गया है। इसकी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक वैभव और लोगों की सादगी, इसे दुनिया के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं।

मैं, गीतांश करन, वर्तमान में आईआईटी भुवनेश्वर के स्थापना अनुभाग में कनिष्ठ अधीक्षक के पद पर कार्यरत हूँ। आईआईटी भुवनेश्वर में शामिल होने से पहले मैं आईआईटी जम्मू में कार्यरत था और मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण समय जम्मू-कश्मीर में बीता। इसी दौरान, वर्ष 2022 की गर्मियों में, मुझे कश्मीर की यात्रा करने का अवसर मिला-एक ऐसा अनुभव, जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल पाऊँगा।

यात्रा की शुरुआत जम्मू से हवाई जहाज़ द्वारा आरंभ हुई। जैसे ही विमान ने कश्मीर की वादियों के ऊपर उड़ान भरी, नीचे फैला दृश्य मानो किसी चित्रकार की कूची से बना स्वप्निल संसार था - सफेद बर्फ की चादर ओढ़े पर्वत, हरी वादियों में लिपटे पहाड़ और उनमें से निकलती नीली नदियाँ। श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतरते ही ठंडी, शीतल हवा ने हमारा स्वागत किया। हम एनआईटी श्रीनगर के अतिथि-गृह में रुके, जो डल झील के समीप स्थित है।

श्रीनगर – झीलों और बागों का शहर : श्रीनगर की पहचान उसकी झीलों और मुगल बागों से है। डल झील के किनारे खड़े होकर मैंने महसूस किया कि प्रकृति ने इस धरती पर अपना सबसे सुंदर चित्र यहीं उकेरा है। शांत पानी, उसमें खिले कमल के फूल, किनारे पर सजे हाउसबोट और



रंग-बिरंगे शिकारे-सब मिलकर मन को मोह लेते हैं। हमने शिकारे की सवारी की और पानी पर तैरते बाजार में फलों, फूलों, हस्तशिल्प और चाय की दुकानों का आनंद लिया। इसके बाद हमने शालीमार बाग, निशात बाग और चश्मे-शाही जैसे मुगल बागों की सैर की, जिनकी स्थापत्य कला और सौंदर्य अद्वितीय है।

गुलमर्ग – बर्फ का संसार : श्रीनगर से लगभग 50 किलोमीटर दूर गुलमर्ग, अपने नाम के अनुरूप, फूलों और बर्फ का अद्भुत संगम है। यहाँ की “गोंडोला राइड” मेरे लिए सबसे रोमांचक अनुभव रहा। ऊँचाइयों से नीचे बर्फ से ढकी



वादियों और पर्वत चोटियों को देखना मानो किसी परीकथा का दृश्य था।

दूधपथरी : हरे मैदान और दूध-सा पानी श्रीनगर से 40 किलोमीटर दूर दूधपथरी अपने हरे-भरे मैदानों और दूध जैसे सफेद बहते पानी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की ठंडी हवा,



जंगली फूल और देवदार के ऊँचे-ऊँचे पेड़, मन को एक अलग ही शांति का अनुभव कराते हैं।

पहलगाम – घाटियों का स्वर्ग : लिद्दर नदी के किनारे बसा पहलगाम, अपने शांत वातावरण और हरे-भरे मैदानों के



कारण 'घोड़ों की घाटी' के नाम से भी जाना जाता है। हमने यहाँ घुड़सवारी की और नदी किनारे समय बिताया।

सोनमर्ग – सोने की घाटी : सोनमर्ग की वादियों में जब सूरज की किरणें बर्फ पर पड़ती हैं, तो सचमुच वह सोने की



तरह चमक उठती हैं। यहाँ से जोजिला दर्रे का दृश्य मन में रोमांच भर देता है।

कश्मीरी संस्कृति और खानपान : कश्मीरी संस्कृति में

मेहमाननवाज़ी का विशेष स्थान है। पारंपरिक 'फ़ेरन' और



रंगीन टोपी उनकी पहचान है। यहाँ के स्वादिष्ट व्यंजनों- 'रोगन जोश', 'यखनी', 'गुश्ताबा' और केसर-सुगंधित 'कहवा'-ने यात्रा को और भी यादगार बना दिया।

यात्रा का प्रभाव : कश्मीर की यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि प्रकृति के साथ जुड़ाव ही सच्ची शांति देता है। यहाँ की हवा, पानी, पहाड़ और लोग-सब मिलकर आत्मा को सुकून देते हैं।

सच्चे अर्थों में कहूँ तो मेरी कश्मीर यात्रा केवल एक पर्यटन अनुभव नहीं थी, बल्कि यह आत्मा को छू लेने वाली एक गहरी अनुभूति थी। यहाँ की बर्फ से ढकी चोटियाँ, हरे-भरे जंगल, निर्मल झीलें और बहती नदियाँ मानो प्रकृति का जीवंत संगीत हैं, जो मन के हर कोने को शांति से भर देते हैं।

कश्मीरी लोगों की सादगी, उनकी मेहमाननवाज़ी, और समृद्ध संस्कृति ने मेरे हृदय में एक स्थायी छाप छोड़ी। यह वह स्थान है जहाँ समय ठहर सा जाता है और हर क्षण एक चित्र की तरह स्मृतियों में अंकित हो जाता है। कश्मीर सचमुच धरती का स्वर्ग है, और जैसा कि मशहूर शायर ने कहा है-

**“गर फिरदौस बर रुये ज़मी अस्त,
हमी अस्तो, हमी अस्तो, हमी अस्त।”**

(अगर धरती पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यही है।)

तनया

कहते हैं हम, सहते हैं हम, रोते हैं हम, खोते हैं हम,
किस बात की सजा है ये, हर बात की वजह है ये
हममें संभावनायें अनन्त हैं, हमारी उपलब्धियाँ अनेक हैं।

फिर क्यों ये रुदन अपार है।

जन्म से हमारे नाराज हैं, माना की हम हैं लडकियाँ,
इस बात से अवगत है हम, कैसे समझायें विश्व को,
ये सृजन, ये प्रलय हमसे है, ये अमृत कलश भी हम ही हैं
ये विष कुम्भ हम ही हैं।

जो सफलता चूम ले, जो लडखड़ाये कदम संभाल ले,
वो आँधियाँ, वो बिजलियाँ, वो सैलाब भी हम ही तो हैं।

पर धरा में आज भी, हम खोजते पहचान हैं,
चाहते सम्मान हैं।

यद्यपि विशक्तियाँ हम से है, ब्रह्माण्ड की भक्ति हम से है।

सुती सुतीक्ष्ण है नजर हमारी, फिर भी हम हैं सुकुमारी

वेद भी, काव्य भी, ग्रंथ भी, सब हम में है समाहित
किन्तु सतयुग ये कलयुग तक, करना पड़ता है प्रमाणित,
अब बंद करो इस नाद को, इति सिद्धम का उद्घोष हो गया।

डॉ. स्तुति अवस्थी

सहायक प्राध्यापक

अमृत वर्षा

कण-कण चितवन घनघोर बरस रही है।
मेघ धरा पर छा रहे हैं, यही सपने,
नित मेरे मानचित्र पर छा रहे हैं।
तपती, प्यासी, व्याकुल धरा कराह कर पुकार रही है।
पसीने से सींच-सींच, थक गया अब किसान है।
अमृत रसधार सी हो, स्वांग माधुर्य सी हो,
अंतिम उम्मीद सी, लाख सपनों की बाट सी।
सभी रिश्तों में संलिप्त हो, हर दुखों की काट सी।
कर दो तृप्त इस भूमि को, प्यास इसकी बुझाओ,
माफ करो गलतियों को, बड़ा हृदय तुम भी दिखाओ।
किए की उनकी सजा, हमें न दो, वो तो चूस लेंगे लहू किसी का,
प्यास उनकी बुझती रहेगी, हमारे, तुम्हीं हो स्वामी।
तुम्हीं रुद्र हो। हे मेघ, बरसा दो अमृत, धरा को तृप्त करो।
धरती की गोद में, बीज आशा के बोए हैं,
हमने ख्वाबों के महल, उम्मीदों से संजोए हैं।
प्रकृति के आशीर्वाद की, चाहत हमें हर घड़ी है,
स्नेह की बूंदों से, हर बंजर भूमि हरी है।
सजीव हो उठेगी धरा, जब बरसेगी वर्षा की धारा,
मिटेगा हर दर्द और दुख, पाएगी हर सांस सहारा।
समृद्धि के गीत गाएगी, धरा नाचेगी फिर से,
अन्न के भंडार भरेंगे, जीवन खिल उठेगा हँसते।
कण-कण में नई उमंग, हर हृदय में नई आस,
मिट जाएंगी सब वेदनाएँ, हर मन में होगा विश्वास।
करुणा और कृपा का वरदान दो, हे मेघ, जीवन को नव प्राण दो।

विश्वास शर्मा

छात्र



आर्तनाद

वसुंधरा के आंचल पर श्रृंगार रूप छाया हूँ मैं,
चर-अचर जीवन से भरा हुआ, कानन कहलाता हूँ मैं,
हरियाली की छटा बिखरे जैव विविधता पाले हूँ,
प्रकृति की अनमोल धरोहर अपने अंतर में साजे हूँ।
शीतल बयार के बीच यहाँ चिड़ियों की कलरव गान भी हैं,
सरहद की बातें भूल यहाँ बसते जीवों के
प्राण भी हैं, सबको अपनाना,
जीवन देना इस में ही खुश होता हूँ
“वसुधैव कुटुम्बकम्” की नीति पर आगे बढ़ता रहता हूँ।
विकासवाद की अंधी दौड़ ने मेरा सीना चीर दिया,
मेरे अस्तित्व को मिटा उसी पर गाड़ी बेंगला खड़ा
किया, पारितंत्र का हिस्सा हूँ मैं, कैसे तुम ये भूल गए!
किस्सा बन कर रह जाओगे, ऐसे ही गर छोर दिए।
जब दुनिया की भाग दौरे से, जी तेरा भर जाता है,
मेरे दर पे समय बिता कर, ताजा होकर जाता है,
सूखा हो या बाढ़ की विपदा, सबमें

साथी हूँ तेरा, उसपर ये व्यवहार तुम्हारा, सहा नहीं अब जाता।
अपने अस्तित्व के खातिर मेरा ध्यान रखो ऐ मानव!
मेरे इस आर्तनाद का मान रखो ऐ मानव! आगे
बढ़ो, गगन चूमो, पर प्रकृति को साथ रखो,
“तुम से हम हैं हमसे तुम”, सदा इसे तुम याद रखो।

राहुल कुमार
सहायक प्राध्यापक

मखमली प्यास..!!

होंठों पर हल्की-सी उजली मुस्कान लिए,
कभी आश, तो कभी कांस बनकर,
कैसे भी, कहीं भी उग आता है वह -
कभी नर्म धूप की गुनगुनाहट में,
तो कभी बिरहा के सावन में।

जब वह खिल उठता है,
मन की गहराइयों को हल्के से छू जाता है;
दिल का दरवाज़ा धीरे से खुल पड़ता है,
और अनजाने ही भीतर
एक हलचल-सी मचल उठती है-
शरद की ठंडी, सुनहरी शामों में।

खिलखिलाते कांस फूलों का नज़ारा,
आँखों की बरसों की प्यास बुझा देता-
अगर घर और नौकरी की
ये जिम्मेदारियाँ न होतीं...
तब मैं भी मचल उठती,
थोड़ा-सा खुद को खोल देती,
और फिर, ज़िंदगी भी कितनी आसान लगती!

लगती ना....!!
पर, यही तो ज़िंदगी है-
एक अधूरी कविता की
नरम, मखमली प्यास,
जो इतनी जल्दी कहाँ बुझती है?
यह प्यास... कभी नहीं बुझती-
कभी नहीं बुझती... ।।

निवेदिता पटनायक

सहायक कुलसचिव (छात्र कार्य)



शहीदों की ज़मीन: मेरा हिंदुस्तान

है सुना इस धरती पर ईश्वर लाता है,
सुख, शांति, समृद्धि का पाठ पढ़ाता है।
पर क्या कभी सोचा किसी ने -
देश अगर न होता, तो मन में जज़्बा,
और रगों में ताक़त, भला कौन पिरोता?
मैं इसके नाज़ उठाता हूँ, सो ये ऐसा नहीं करती।
ये मिट्टी मेरे हाथों को कभी मैला नहीं करती।
शहीदों की ज़मीन है, जिसे हिंदुस्तान कहते हैं,
ये बंजर होके भी बुज़दिल कभी पैदा नहीं करती॥
आज लोगों में देशभक्ति कम होते देख,
मेरा देश भी रो पड़ता है। फिर भी कोई दुविधा आने पर,
मजबूत खड़ा अकड़ता है। तू फ़िक्र न कर ऐ मेरे वतन,
ये तेरा पुजारी तुझ पे आज भी मरता है।

अंशिका जैन
छात्र

मुश्किल तेरा अंत नहीं

अगर मंज़िल धुंधली लग रही है,
हिम्मत खत्म हो रही है -
तो जान ले,
कि जो तेरे आगे हैं,
वो तो नाज़ुक से धागे हैं।
तूने अपने सपने के लिए
कितने मील भागे-भागे हैं,
कितनी रातें जागे हैं,
कितने शौक त्यागे हैं।

तू वो नहीं जो आज दिख रहा है,
तू वो नहीं जो आज रुक रहा है -
तू तो वो बाघ है
जो रोकने से भी ना रुके,
तुझमें वो आग है
जो पानी से भी ना बुझे।

पत्थर ठोकर खाकर ही मूर्ति बनता है,
सोना तप-तप कर और चमकता है।
अब उठ, जाग, और आगे बढ़ -
अपनी जीत के नए किस्से गढ़!
अपनी उड़ान से दिखा दे सबको,
अपनी जीत की गूंज से बता दे सबको -
कि जैसे रात का सूरज से अंत नहीं,
वैसे ही...

मुश्किल तेरा अंत नहीं।
मुश्किल तेरा अंत नहीं।

श्रीया जैन
छात्र

तुमने आखिर क्या देखा

तुमने आखिर क्या देखा !
जो आग तुम्हारे अंदर है, या गंगा की रसधारा को !
पावन चितवन अंतर्मन, या पतित विचारधारा को !
कुछ क्षण की आजादी, या जन्मों का बंधन देखा !

तुमने आखिर क्या देखा !

फूलों की मधुता देखी, या भौंरो के तड़पन को !
नीरद का अंदाज निराला, या बूंदों की अकड़न को !
क्षितिज-सूर्य की शीतलता, या तपता हुआ चंद्र देखा !

तुमने आखिर क्या देखा !

रंग बिरंगी दुनिया को, या मेरे मन का सूनापन !
अपना पागलपन देखा, या मेरा दीवानापन !
मेरे प्रेम की गहराई, या जग का ओछापन देखा !

तुमने आखिर क्या देखा !

तुमने आखिर क्या देखा !!!

- अज्ञात

तुम्हें ढूँढता हूँ

तुम्हे ढूँढता हूँ
फूलों में बहारों में
दिलकश नजारों में
चाँद में सितारों में
खुद की परछाई में
दिल की तन्हाई में
तुम्हे ढूँढता हूँ ।

हर एक अफ़साने में
बीतें ज़माने में
लबों की खामोशी में
अनकही सी बातों में

भीड़ की तन्हाई में
बिछड़न की गहराई में
तुम्हे ढूँढता हूँ ।

मन की उदासी में
खुशियों के मौसम में
साम में सवेरे में
ग्रामों के अंधेरे में
तुम्हे ढूँढता हूँ ।

- अज्ञात

फिर कर लेने दो प्यार प्रिये

अब अंतर में अवसाद नहीं
चापल्य नहीं उन्माद नहीं
सूना-सूना सा जीवन है
कुछ शोक नहीं आल्हाद नहीं

तव स्वागत हित हिलता रहता
अंतर वीणा का तार प्रिये ..

इच्छाएँ मुझको लूट चुकी
आशाएँ मुझसे छूट चुकी
सुख की सुन्दर-सुन्दर लड़ियाँ
मेरे हाथों से टूट चुकी

खो बैठा अपने हाथों ही
मैं अपना कोष अपार प्रिये
फिर कर लेने दो प्यार प्रिये ..

हो गई है पीर पर्वत

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

आज ये दीवार पर्दों की तरह हिलने लगी
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मिरा मक्कसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए



दुष्यंत कुमार

ये दोनों रचनायें दुष्यंत कुमार (1933 – 1975) की हैं जिनका जन्म उत्तर प्रदेश के बिजनौर जनपद में हुआ था। ये हिंदी साहित्य के उन विरले कवियों में हैं जिन्होंने ग़ज़ल जैसी विधा को आम हिंदी पाठकों के लिए सहज और प्रासंगिक बनाया। वे न सिर्फ एक कवि थे, बल्कि एक संवेदनशील चिन्तक और जनमानस की आवाज़ भी थे। उनकी कविताएँ और ग़ज़लें सामाजिक, राजनीतिक और व्यवस्था के विरोध में एक प्रखर स्वर के रूप में उभरीं। इनकी बहुत सारी रचनायें फ़िल्मों, टेलीविज़न के सीरियल्स में भी उपयोग किया गया है।

संपर्क:

राजभाषा एकक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

खोर्धा, ओडिशा, भारत

दूरभाष: +91 674-713-5097

ईमेल: office.rajbhasha@iitbbs.ac.in

वेब: <https://www.iitbbs.ac.in/index.php/hindi-home-page/>